मेरी दृष्टि मेरा चिन्तन

पुष्करलाल केडिया

९६७०

प्रकाशक :

मनीषिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक........

मेरी दृष्टि
मेरा चिन्तन

पुष्करलाल केडिया

मनीषिका
१६८ए, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ०७०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

MANISHIKA'S TITLE No. 2
MERI DRISHTI : MERA CHINTAN
by Sri Pushkar Lal Kedia

आगत क्र. २५८१
दिनांक ..

मेरी दृष्टि : मेरा चिन्तन

श्री पुष्करलाल केडिया के लेखों का संकलन

प्रकाशक :
मनीषिका
१६८ए, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ०७०

मुद्रक :
मेहता फाइन आर्ट प्रेस
२०, वालमुकुन्द मक्कर रोड, कलकत्ता-७०० ००७

प्रथम संस्करण अगस्त १९८२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सद्भावना

पुष्करलाल केडिया समाजसेवी रहे हैं। स्काउटिंग, नागरिक स्वास्थ्य संघ और भी कई संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। आजकल विशुद्धानन्द हास्पिटल चलाते हैं। मैं दो बार हास्पिटल देखने गया और दोनों बार इनके काम से प्रभावित हुआ। लेकिन यह पता नहीं था कि पुष्करलाल साहित्य में भी रुचि रखते हैं।

पुष्करलाल की यह कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। कहानियों की हमारे पुरानी परिपाटी है। हमारे ऋषी सीधा उपदेश तो देते ही थे, किन्तु कहानियों के माध्यम से बहुत सा उपदेश दे देते थे। ऋग्वेद में भी वैज्ञानिक और आध्यात्मिक विषयों पर कहानियाँ हैं। 'कथासारित्सागर' का नाम तो साहित्य-जगत् अच्छी तरह से जानता ही है। यहाँ की बहुत सी कहानियाँ अरब जाकर 'अलिफलैला' में लिखी गयीं हैं।

पुष्करलाल ने इन कहानियों के विषय भी नये चुने हैं। विषय सामयिक भी हैं और शिक्षाप्रद भी हैं। किन्तु मैं पोलिटीकल नेता को जादूगर मानने में सहमत नहीं हूँ। हाँ, उन्हें चित्रकार कहा जा सकता है, जो झूठा चित्र बनाकर लोगों को लुभाते हैं। खैर जो भी हो, मेरी सद्भावना है कि पुष्करलाल को साहित्य में और भी सफलता प्राप्त हो।

८ सितम्बर, १९८१ — *लक्ष्मी निवास बिरला*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मनिवेदन

सामाजिक क्षेत्र में विगत चार दशकों से कार्यरत रहते हुए मुझे जो जीवन-दृष्टि और गहन चिन्तन की प्रवृत्ति मिली, उसे मैं अपने जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानता हूँ। वर्षों तक मेरा एकान्त चिन्तन केवल वार्तालाप और वक्तव्यों के माध्यम से ही सामने आता रहा है। उसे लिपिबद्ध करने की आकुलता मैंने अपने भीतर सर्वदा अनुभव की। धीरे-धीरे मैंने अपने विचारों को लेखबद्ध करने का प्रयास शुरू किया। स्काउट-आन्दोलन से छात्र-जीवन से ही सम्बद्ध होने के कारण मैं बालकों, किशोरों और तरुणों के सम्पर्क में निरन्तर रहा हूँ। मैंने सबसे पहले अपने विचारों को उनके सामने रख कर, उनकी उपयोगिता को परखा और मुझे यह देखकर सन्तोष हुआ कि वे मेरी बातों से पूरी तरह प्रभावित हुए।

मैंने एक चीज बड़ी तीव्रता के साथ अनुभव की है कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के त्रुटिपूर्ण, अवैज्ञानिक और दूरदर्शिताहीन होने के फलस्वरूप नयी पीढ़ी में जीवनोपयोगी ज्ञान के प्रति दिनोदिन उदासीनता और अनास्था बढ़ रही है। उसमें अपने धर्म, संस्कृति, इतिहास, आचार-विचार और राष्ट्रीय गौरव के प्रति रुचि और लगाव नहीं के बराबर है।

नयी पीढ़ी की इसी मानसिकता को परिवर्तित करने के ध्येय से मैंने और मेरे साथियों ने कलकत्ता महानगर की सुप्रतिष्ठित सेवा-संस्था 'नागरिक स्वास्थ्य संघ' की ओर से 'बाल-युवा विकास योजना' क्रियान्वित की, जो यहाँ के शिक्षा-क्षेत्र में सर्वत्र प्रशंसित हुई है और सफलतापूर्वक चल रही है। इस योजना के अन्तर्गत मुझे विभिन्न विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के बीच उपस्थित होकर, आत्मीयतापूर्ण वातावरण में उनसे बातचीत करने और उन्हें धर्म, संस्कृति, सदाचार, जीवन-दर्शन, स्वास्थ्य, स्वच्छता, चरित्र, अनुशासन, देश-समाज आदि अनेकानेक महत्त्वपूर्ण विषयों से सम्बन्धित ज्ञातव्य बातें रोचक पद्धति से बतलाने-समझाने का अवसर मिला। मेरे आत्ममंथन और सोद्देश्य लेखन को गति देने में इस योजना का भी काफी बड़ा योगदान है।

नीरस विषयों और कठिन तथ्यों को रुचिकर एवं सहज ग्रहणीय बनाने में कथाओं का सहारा लेने की युक्ति सर्वोत्तम है। पुरातन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीति-कथाएं और पंचतंत्र की कथाएं इसके प्रमाणस्वरूप सामने रखी जा सकती है। मैंने भी अपनी बात कहने के लिये इसी मनोवैज्ञानिक पद्धति को अपनाया है।

चिन्तन का आकाश सीमाहीन है। मनुष्य के मस्तिष्क में इतनी शक्ति-सामर्थ्य है ही नहीं कि वह चिन्तन मे संख्यातीत विषयों को समेट सके। चिन्तन के विषय हमारे चतुर्दिक विखरे पड़े हैं। किसी भी विषय को चुनकर, हम उसके सम्बन्ध में अपने विचारों को एकत्र करें, तर्क की कसौटी पर उन्हें परखें, ज्ञान के तराजू पर उन्हें तौलें और फिर उन्हें शब्दों में बाँधें, तभी हमारा चिन्तन लोकोपयोगी बन सकेगा। सामाजिक क्षेत्र में कार्य करनेवाले लोगों के लिये आज कुछ भी करने से पहले अपनी विचारधारा की दिशा निश्चित कर लेना जरूरी है। पग-पग पर विचारों में अस्थिरता का होना हमारे दिग्भ्रमित होने का कारण बन सकता है।

निरुक्तकार यास्काचार्य ने 'मनुष्य' शब्द का विवेचन करते हुए लिखा है—'मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति इतिमनुष्या.' (निरुक्त ३/२) अर्थात् जो व्यक्ति (मत्वा) मनन=विवेकपूर्ण (कर्माणि) समस्त क्रिया-कलाप को (सीव्यन्ति) सीते हैं—कटे-फटे एक दूसरे से पृथक हुए मानव समाज को विधिवत् सुसंगठित बनाते हैं, वे 'मनुष्य' कहे जाते हैं। तात्पर्य यह हुआ कि जिस व्यक्ति को समस्त हलचल ज्ञान पर आधारित हो, जो पहले समझता है फिर करता है, पहले तोलता है, फिर बोलता है, पहले सोचता है. फिर कदम उठाता है, वह बुद्धिजीवी प्राणी 'मनुष्य' पदवी का अधिकारी है।

चिन्तन से दृष्टि परिष्कृत होती है, विवेक के दर्पण पर पड़ी हुई धूल साफ हो जाती है, अपने भीतर छिपी हुईं शक्तियों को एक बिन्दु पर केन्द्रित कर पाना सम्भव होता है तथा औचित्य एवं अनौचित्य के सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाली भ्रान्तियाँ निर्मूल होती हैं। प्रकृति ने जब हमें सोचने के लिये सर्वगुणसम्पन्न मस्तिष्क प्रदान किया है. तो हम दूसरे के विचारों की वैसाखी का सहारा लेकर क्यों चलें? चिन्तन को निरर्थक मानसिक व्यायाम कहकर यदि हम उसकी उपेक्षा करते हैं और अपने मस्तिष्क की निष्क्रियता को ही सुखदायी मानते हैं तो यह हमारी भूल है।

चित्त की एकाग्रता एक अद्भुत यौगिक क्रिया है। एकाग्रता की अवस्था में हम जगत् और ईश्वर के वास्तविक रूप का दर्शन कर सकते हैं। प्राचीन ऋषियों ने प्रकृति के गूढ़ रहस्यों का अनुसंधान इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाग्रता से ही किया था। घर, समाज, देश के विविध पहलुओं पर गहराई से सोचकर हम देखें तो हमें ऐसा अनुभव होगा जैसे हमारे भीतर कोई अन्य पुरुष हमारे प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर दे रहा है। उस अदृश्य पुरुष को हमारा चिन्तन ही जगाता है।

मैंने विविध विषयों पर जो कुछ सोचा है, उसे लिपिबद्ध करके आपके सामने इस आशा के साथ रख रहा हूँ कि यदि ये विषय उपयोगी हैं तो आप भी इनके सम्बन्ध में विचार करें। सम्भव है मेरे विचारों से कहीं अधिक श्रेष्ठ और सारगर्भित आपके विचार हों। मेरे अनेक शुभचिन्तकों, मित्रों तथा परिचितों की इच्छा थी कि मैं इन लेखों को पुस्तकाकार प्रकाशित कराऊँ। उनका स्नेहभरा आग्रह मैं पूरा कर सका, इस बात का मुझे सन्तोष है।

कीर्तिलब्ध साहित्य-साधक एवं देश के स्वनामधन्य उद्योगपति श्री लक्ष्मीनिवासजी बिरला ने इस पुस्तक के प्राक्कथन के रूप में अपनी सद्भावना प्रेषित करके मुझे कृतार्थ किया है। मैं तदर्थ उनका ऋणी हूँ। जिन पत्र-पत्रिकाओं में मेरे ये लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं, उनके सम्पादकों के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना मैं नहीं भूल सकता। उनके सहयोग से ही मेरे विचार जनसाधारण तक पहुँच सके हैं। इन लेखों को पढ़कर अनेकानेक प्रबुद्ध पाठकों, साहित्य-प्रेमियों, लेखकों तथा सुरुचिसम्पन्न व्यक्तियों ने मेरे पास काफी बड़ी संख्या में पत्र लिखे हैं। मैं उन सबको आभारपूर्ण धन्यवाद देता हूँ।

मेरी ऐसी मान्यता है कि यह दृश्य जगत् हमारी दृष्टि और चिन्तनशील मस्तिष्क को कभी निष्क्रिय नहीं रहने देता है। हमारे भीतर कोलाहल करती हुई जिज्ञासाएँ हमें सत्यों और रहस्यों के अथाह सागर में बार-बार गोता लगाने के लिये प्रतिक्षण उकसाती रहती हैं। गोता लगानेवाला कोई भी हो, वह खाली हाथ कभी बाहर नहीं आता। हममें से प्रत्येक स्वयं चेष्टा करके देख सकता है। 'जिन खोजा तिन पाइयाँ' की लोकप्रसिद्ध उक्ति अक्षरशः सत्य है।

पुस्तक में संकलित लेखों में यदि प्रबुद्ध पाठकों को कुछ सोचने की सामग्री मिल सकी, तो वही मेरे लेखन की सबसे बड़ी सार्थकता होगी। मुझे आशा है कि पाठकवृन्द की सम्मतियों से मेरे वैचारिक धरातल को और अधिक सुदृढ़ता प्राप्त होगी।

— पुष्करलाल केडिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख-क्रम

प्रथम पूजनीय श्री गणेश	....	९
मानव-शरीर :: एक मूल्याङ्कन	....	१६
सफलता की सिद्धि :: कुछ प्रेरक प्रसंग	....	१९
सुख-दुःख :: एक कल्पना	....	२४
अल्लादीन के जादुई चिराग़ का रहस्य	....	२८
कबिरा गरब न कीजिये	....	३३
सेवा का पथ :: जहाँ काँटे भी फूल बनते हैं	....	४०
शक्तिदायिनी माँ दुर्गा	....	४४
सम्बोधन का मनोविज्ञान	....	४९
भगवान श्रीकृष्ण का आदर्श	....	५४
जादूगर नेताओं का मैजिक शो	....	५७
परिवार-प्रमुख भगवान शिव	...	६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कृति समर्पित है—

उन बन्धुओं को—

जो नवीन दृष्टि—नवीन चिन्तन के दर्पण
में किसी सत्य का दर्शन करके प्रसन्नता अनुभव करते हैं।

उन तरुणों को—

जिन्हें जीवन में कर्मयोगी बनने के लिये
किसी सुदृढ़ वैचारिक धरातल की तलाश है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्यकर्त्ताओं के प्रेरणा-स्रोत

प्रथम पूजनीय श्रीगणेश

● ● ●

अजीत के बहन की शादी होने वाली है। अनेक सगे-सम्बन्धी उसके यहाँ आये हुए हैं। विवाह की रस्में शुरू होने वाली हैं। इस अवसर पर सर्वप्रथम भगवान श्रीगणेश के पूजन की तैयारी हो रही है। पंडितजी पूजा कराने के लिए अपने आसन पर विराजमान हैं। पूजा-सामग्री जुटायी जा चुकी है। अजीत पंडितजी को सुपारी का एक गणेश बनाते हुए देख रहा है। उसके पिताजी विधि के अनुसार पूजा-कार्य कर रहे हैं।

अजीत के मन में प्रश्न उठता है कि सभी धार्मिक, सामाजिक तथा अन्य मांगलिक अनुष्ठानों में श्रीगणेश का पूजन सर्वप्रथम क्यों किया जाता है? उसने इस बारे में दो-एक धार्मिक कहानियाँ सुनी हैं, किन्तु उनसे उसकी जिज्ञासा शान्त नहीं हुई है।

पूजन की पूर्णाहुति तक श्रीगणेश-पूजन की प्रत्येक क्रिया को ध्यानपूर्वक देखने के बाद वह अपने पिता से इस बारे में पूछ ही बैठा—"पिताजी, श्रीगणेश की पूजा सबसे पहले क्यों की जाती है?" प्रश्न सुनकर पहले तो उसके पिता ने समझा कि वह अजीत की बाल-सुलभ जिज्ञासा मात्र है, किन्तु उसके मुख की गम्भीर मुद्रा को देखकर उनको यह समझते देर न लगी कि वह श्रीगणेश के विषय में सचमुच गहराई से कुछ सोच रहा है।

अजीत के पिता ने कहा—"भगवान श्रीगणेश बुद्धि और विवेक के देवता हैं। वे सर्वविघ्ननाशक कल्याणकारी देव के रूप में लोक में पूजे जाते हैं। सफलता की सिद्धि के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम विघ्नों को दूर करने का प्रयत्न किया जाय, अतः विघ्ननाशक के रूप में उनकी पूजा सबसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले होनी स्वाभाविक है। श्रीगणेश के स्वरूप में विघ्नों को दूर करने की युक्ति प्रतीकों में छिपी हुई है।" अजीत ने दूसरा प्रश्न किया—"तो क्या पूजन करने से श्रीगणेश स्वयं आकर कार्य को सफल करते हैं?" उसके पिता ने समझाया—"पूजा का रहस्य यह है कि हम जिस देवता में जो गुण विद्यमान हैं, उनका स्मरण करें, उन्हें ध्यान में रखकर, उनके अनुकूल कार्य करें। पूजन के समय हम देवताओं के गुणों का गान इसलिये करते हैं कि ऐसा करने से हमारी भावना उन गुणों के अनुकूल कार्य करने के लिए हमें प्रेरित करती है। पूजन की सफलता तभी है जब हम गुणों को ग्रहण करें।"

अजीत की बातों से उसके पिताजी ने अच्छी तरह समझ लिया कि वह श्रीगणेश के बारे में विस्तारपूर्वक जानना चाहता है।

अजीत के पिताजी ने श्रीगणेश के स्वरूप का वर्णन करते हुए उसे बताया—"पार्वतीनन्दन श्रीगणेश के शरीर के प्रत्येक अंग में गहरा अर्थ छिपा हुआ है। श्रीगणेश का सिर हाथी का है। हाथी विश्व का सबसे बड़ा प्राणी है। वह सबसे अधिक भार उठा सकता है। हाथी का सिर इस बात का द्योतक है कि जो व्यक्ति किसी भी अनुष्ठान का संकल्प लेगा, उसे उसका सारा बोझ अपने सिर पर उठाना होगा। वह अपनी जिम्मेदारी किसी दूसरे पर नहीं डाल सकता, वैसे वह सहयोग सभी का ले सकता है। हाथी का सिर सबसे मजबूत होता है। बड़े-बड़े पेड़ों को वह अपने सिर से टक्कर मारकर गिरा सकता है। इसके बारे में एक रोचक घटना सुनाता हूँ। एक बार माल से लदी हुई एक लॉरी कीचड़ में फँस गयी। लगभग तीस-चालीस आदमियों ने लॉरी को निकालने की चेष्टा शुरू की, लेकिन उन्हें सफलता न मिली। तभी उधर से एक व्यक्ति अपने हाथी के साथ गुजरा। लॉरी वालों ने उससे अनुरोध किया कि वह अपने हाथी के सहयोग से उनकी लॉरी निकालने में मदद करे। हाथी ने अपना मस्तक लॉरी में लगाया और देखते ही देखते लॉरी कीचड़ से इस तरह बाहर निकल गई जैसे किसी बच्चे ने ठोकर मारकर कोई गेंद उछाल दी हो। हाथी के सिर में प्रहार सहने की भी शक्ति है। बड़े कार्य करने वालों को आक्षेपों एवं कटु आलोचनाओं का प्रहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहने के लिए प्रस्तुत रहना चाहिए और उनसे विचलित हुए बिना मनोयोग से अपने कार्य में लगे रहना चाहिए। सफलता तभी सम्भव होती है।"

अजीत ने पूछा—"हाथी के तो दो दाँत होते हैं, श्रीगणेश के मुँह में एक ही दाँत क्यों है ?" पिताजी बोले-"हाथी के मुँह में खाने और दिखाने के दाँत अलग-अलग होते हैं, किन्तु श्रीगणेश का खाने का कोई दाँत नहीं है। बाहर दिखाई पड़ने वाला एकमात्र दाँत सिर्फ दिखाने का दाँत है। वह इस बात का द्योतक है कि आवश्यकता पड़ने पर यदि किसी को दाँत (भय) दिखाना पड़े तो उस समय भावना सिर्फ भय दिखाने की ही होनी चाहिए, किसी का कोई अनिष्ट करने की नहीं। एक छोटी सी कहानी सुनो तो यह बात अच्छी तरह समझ सकोगे। एक बार एक साँप नदी के किनारे बैठा था। एक साधु उधर से निकला। साँप ने जब साधु को डँसने की चेष्टा की तो उसने बड़े धैर्य के साथ उसे समझाया कि उसके डँसने से अनेक व्यक्तियों की मौत पहले भी हो चुकी है, अतः एक और पाप उसको अपने सिर पर नहीं लेना चाहिए। साँप पर साधु की इस बात का बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने आश्वासन दिया कि वह भविष्य में किसी को भी नहीं डँसेगा। धीरे-धीरे यह बात चारों ओर फैल गयी। फिर तो बच्चे भी निडर हो गये और प्रतिदिन इकट्ठे होकर साँप को ढेले से मारने में खेल का आनन्द लेने लगे। पत्थरों की मार से साँप की दशा दयनीय हो गयी। वह साधु को दिया हुआ वचन नहीं भूला और सब कुछ सहन करता रहा।

कुछ दिनों के बाद वही साधु फिर उधर से निकला। साँप को बुरी दशा में देखकर उसने उससे इसका कारण पूछा। साँप ने दुःखी होकर आपबीती कह सुनाई। साधु को उसकी बात सुनकर बड़ा दुःख हुआ। उसने उसे समझाया कि किसी को व्यर्थ डँसना अवश्य ही पाप है, किन्तु आत्मरक्षार्थ शत्रु को भयभीत करने के लिये फुफकार मारने में तो कोई दोष नहीं है। उसने फुफकारना छोड़कर ही भूल की। साँप को पूरी बात समझ में आ गयी। जिस दिन से उसने फुफकारना शुरू किया, किसी को उसके निकट आने की हिम्मत नहीं हुई। श्रीगणेशजी का एक दाँत इसी बात की ओर संकेत करता है।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अजीत ने पूछा—"जब हाथी के सिर का इतना गहरा अर्थ है तो हाथी की छोटी आँखों का भी कोई अर्थ जरूर होगा।" पिताजी बोले—" वह भी बताता हूँ। हाथी के शरीर के अनुपात में उसकी आँखें छोटी जरूर हैं, मगर दृष्टि इतनी तीक्ष्ण है कि जमीन पर चलती हुई चींटी भी हाथी को काफी बड़ी दिखाई देती है। यह इस बात का प्रतीक है कि हमारी दृष्टि बहुत तीक्ष्ण होनी चाहिए, जो छोटी से छोटी बात को भी बारीकी से समझ और परख सके।"

अजीत की जिज्ञासा बढ़ती ही गई। अब वह श्रीगणेश के बड़े कान का रहस्य बताने की भी हठ अपने पिता से करने लगा। उसके पिताजी ने बतलाया कि—"तुमने कान के बारे में अपनी किताबों में कई मुहावरे पढ़े होंगे। उनमें से एक मुहावरा प्रसिद्ध है कि जो मनुष्य कान का कच्चा होता है, वह बहुत जल्दी किसी गलत बात पर भी विश्वास कर लेता है। कान का कच्चा होने के कारण ही अनेक परिवारों में फूट के बीज पनपने लगते हैं। अक्सर हम सुनी हुई बातों पर विश्वास करके कुछ क्षणों के लिए अपने दोस्त को दुश्मन समझ बैठते हैं और झूठी बातें कहनेवाला दुश्मन होते हुए भी हमें अपना हितैषी मालूम पड़ने लगता है। किसी बड़े कार्य का संकल्प लेने वाले के प्रति लोग तरह-तरह की बातें करने लग जाते हैं। कार्य करने वाला कभी-कभी आलोचनाओं से विचलित होकर अपना धैर्य खो बैठता है और कार्य करना बन्द कर देता है। श्रीगणेश के बड़े कान यही तो सिखाते हैं कि हम कान के पक्के बनें, छोटी-छोटी बातों को भी गहराई से सोचें, और व्यर्थ की बातों को अपने कानों में समा जाने दें अथवा दूसरे कान से निकल जाने दें।"

श्रीगणेश की बड़ी सूँढ़ का रहस्य बताते हुए उसके पिताजी ने कहा—"कान की तरह नाक के बारे में भी कई मुहावरे प्रचलित हैं जैसे—नाक कटना, नाक ऊँची रखना, नाक नीची होना आदि। मनुष्य के शरीर में नाक प्रतिष्ठा का द्योतक है। श्रीगणेश की बड़ी नाक का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को समझना चाहिए कि नाक ऊँची रखने के लिए कार्य-सिद्धि अनि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार्य है। उसके द्वारा की गयी छोटी सी गलती भी नाक कटने अर्थात् उसकी प्रतिष्ठा नष्ट होने के कारण बन सकती है। जिसे अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान होगा, वह पूर्णतः सावधान रहेगा और उसके निकट न तो विघ्न आयेगें, न असफलता आयेगी।"

बात पूरी होते ही अजीत बिना कोई प्रश्न किये हँस पड़ा। उसने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए अपने पिता जी की ओर देखा। पिताजी उसका आशय समझ गये और अपनी भी हँसी नहीं रोक सके। अब श्रीगणेश के लम्बोदर होने का रहस्य उन्हें अपने बेटे को समझाना था। वे बोले—"हमारा उदर शरीर का सबसे ज्यादा उदार हिस्सा है। यह जब तक दूसरे अंगों के लिए उद्योग करता रहता है, तब तक ठीक रहता है। उसका काम है भोजन का रस बनाकर बड़े उदार भाव से शरीर के विभिन्न अंगों में पहुँचाना और उनमें शक्ति का संचार करना। श्रीगणेश भी सबसे उदार देवता हैं। वे अपना पूजन करने वालों को प्रेरणा देते हैं कि उन्हें अपनी शक्ति का उपयोग दूसरों की सहायता करने के लिए करना चाहिए। जब उदर सिर्फ अपने लिए ही भोजन करना शुरू कर देता है तो अपच की बीमारी होती है। श्रीगणेश का लम्बोदर होना इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य को परोपकार करते हुए उदर का गुण अपनाना चाहिए।"

अजीत अपने मन में उठने वाले सारे प्रश्नों का उत्तर पा लेना चाहता था। उसने तस्वीर में श्रीगणेश के सामने पड़ी हुई बहियाँ देखीं। उसने अपने पिताजी से उसके बारे में कुछ जानना चाहा। उसके पिताजी बोले—"तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि श्रीगणेश विश्व के प्रथम शार्टहैंण्ड राईटर थे। महर्षि वेदव्यास को महाभारत लिखने के लिए किसी ऐसे सुयोग्य लेखक की आवश्कता थी जो लेखनकार्य में हर प्रकार से दक्ष हो। उनकी इच्छा थी कि जिस गति से वे बोलते जायें, लेखक उसी गति से लिखता जाये। सभी देवताओं ने इस कार्य के लिए श्रीगणेश को ही उपयुक्त बताया। श्रीगणेश के सहयोग से ही महाभारत जैसा महाग्रन्थ लिखा जा सका। तस्वीर में श्रीगणेश के निकट पड़ी हुई बहियाँ इस बात का भी संकेत करती हैं कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुलक्कड़ प्रकृति का व्यक्ति किसी कार्य को अधूरा छोड़ देता है। एक कार्य में हजारों छोटी-बड़ी आवश्यकताएं होती हैं, अतः भूलों से बचने और हर कार्य को फौरन नोट कर लेने के लिए किसी वही, नोटबुक या कागज़ को हमेशा साथ में रखना जरूरी है।"

अजीत यह भी जानना चाहता था कि श्रीगणेश तथा अन्य देवताओं की पूजा प्रतिदिन क्यों होती है। उसके पिताजी ने बताया—"जिस तरह से भोजन और दूसरी जरूरी क्रियाएं प्रतिदिन अनिवार्य होती हैं, उसी तरह से अपने आचार-विचार, स्वभाव और दिनचर्या को ठीक रखने के लिए प्रतिदिन पूज्य देवताओं के महान गुणों का स्मरण करते रहना भी हमारे लिए अति आवश्यक है। जव हमें अपनी भूलों का ध्यान रहेगा और उन्हें सुधारने की दैनिक प्रेरणा मिलेगी तो सफलता सदा हमारे चरण चूमेगी।"

अजीत के चेहरे पर सन्तोष झलक रहा था। वह मुस्कराते हुए श्रीगणेश को देखने लगा। शायद वह मन ही मन सोच रहा था कि अब वह इस रहस्य को अपने साथियों को भी समझा सकेगा और स्वयं भी इस वात का प्रयत्न करेगा कि श्रीगणेश का प्रतिदिन स्मरण करके, उनके गुणों को ग्रहण करने की चेष्टा करे।

अचानक उसकी आँखें सामने की ओर उठीं और उसने देखा कि एक चूहा कहीं से निकलकर श्रीगणेश के पास रखे हुए प्रसाद के थाल में से एक लड्डू खाने लगा। अजीत वोल उठा—"वह देखिये पिताजी, श्रीगणेश की प्रिय सवारी प्रसाद खाने के लिए आ पहुँची।" अजीत के पिताजी हँस पड़े। अजीत ने अभी चूहे की सवारी के वारे में तो पूछा ही नहीं था। वह सोच रहा था जिस देवता का सिर हाथी का है, इतना लम्बा उदर है, वह छोटे से चूहे की सवारी भला कैसे कर सकता है ? अजीत के पिता ने उसके पूछने के पहले ही कहा—"चूहा अति छोटा प्राणी है और हाथी स्थूलकाय जीव है। श्रीगणेश के इस मूषक वाहन में भी एक विशेष रहस्य छिपा हुआ है। किसी भी कार्य में सफलता चाहने वालों में जहाँ सबसे अधिक भार वहन करने की शक्ति होनी चाहिए, वहीं उनमें यह सूझ-वूझ भी होनी चाहिए कि वे छोटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तियों की किसी भी प्रकार उपेक्षा न करके, उनसे सहयोग लेकर अपना काम करवा सकें। मनुष्य सारे कार्य अकेले नहीं कर सकता है, अतः उसको अपने कार्य की सफलता के लिए छोटे-बड़े सभी को समान महत्त्व देना चाहिए। उसे प्रत्येक व्यक्ति को इस तरह अपने साथ रखना चाहिए कि वह यह समझे कि उसके सहयोग के अभाव में अभीष्ट कार्य सफल हो ही नहीं सकता है" ●

प्राचीन ग्रन्थों में विघ्नहर्ता श्रीगणेश के बारह नाम दिये गये हैं और कहा गया है कि जो इन बारह नामों को पढ़ता-सुनता है उसके लिए विद्यारम्भ, विवाह, नगर-प्रवेश, गृह-प्रवेश, यात्रा-प्रस्थान आदि समस्त कार्यों तथा युद्ध-यात्रा, संकट-निवारण के प्रयासों में विघ्न-बाधाओं का आगमन नहीं होता। श्रीगणेश के बारह नाम हैं— (१) सुमुख (२) एकदन्त (३) कपिल (४) गजकर्ण (५) लम्बोदर (६) विकट (६) विघ्ननाशक (८) विनायक (९) धूम्र-केतु (१०) गणाध्यक्ष (११) भालचन्द और (१२) गजानन। इन नामों के अर्थों में भी श्रीगणेश के स्वरूप एवं गुणों में छिपे हुए विघ्ननाश के संकेतों को ढूँढ़ना चाहिये। श्रीगणेश-तत्त्व की व्याख्या एक साधारण लेख में सम्भव भी नही है। उपर्युक्त लेख उनके स्वरूप में छिपे गूढ़ रहस्यों की ओर एक संकेत मात्र है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानव-शरीर
एक मूल्यांकन

• • •

एक बार एक व्यक्ति अपने दाँत बदलवाने के लिए दाँत के डाक्टर के पास गया। दाँत के डाक्टर ने उसके बचे हुए तीन दाँत निकाल कर, उसके सभी दाँतों की जगह माप ली और उसे बताया कि नये नकली दाँतों का सेट बनाने में तीन सौ रुपया लगेगा। उसने उसे सात दिन बाद आकर अपने नये दाँत ले जाने के लिए कहा। दाँतों के बिना वह व्यक्ति काफी तकलीफ़ अनुभव कर रहा था। उसने तीन सौ रुपये देना स्वीकार कर लिया। नियत समय पर वह डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने रुपये लेकर नकली दाँत लगा दिये। डाक्टर ने उसे दाँतों की देखभाल के लिए कई बातें बताईं। उसने सभी बातों पर पूरा ध्यान देने की स्वीकृति दी।

डाक्टर ने उसे समझाया कि किस तरह वह रोज इन नकली दाँतों को साफ करेगा और किस प्रकार सोते समय इन्हें ठीक स्थान पर सँभाल कर रखेगा। सभी हिदायतों पर हाँ में हाँ मिलाते देख कर डॉक्टर की उत्सुकता बढ़ी। उससे यह बात पूछे बिना न रहा गया कि उसने असली दाँतों की देख-भाल क्यों नहीं की और इन नकली दाँतों के लिए ये सारे काम करने को क्यों तैयार है। उस आदमी ने कहा—"डॉक्टर साहब, पहले वाले असली दाँत तो फोकट (बिना पैसे) के थे पर अब इनका पैसा लगा है।" उत्तर सुनकर डाक्टर साहब भी अपनी हँसी न रोक सके।

इस उदाहरण का तात्पर्य यह है कि हम अपने अमूल्य शरीर को शायद "बिना मूल्य" का समझते हैं और इसी कारण इसका पूरा ध्यान नहीं रखते। मानव-शरीर का एक-एक पुर्जा बहुमूल्य है। आज के इस वैज्ञानिक एवं मशीनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युग में ऐसी कोई मशीन वैज्ञानिक नहीं बना सके हैं जो इसके पुर्जों की बराबरी कर सके। वैज्ञानिकों ने ऐसी चीजें अवश्य आविष्कृत की हैं, जो हमें सहारा दे सकती हैं, पर किसी अंग की पूर्ति नहीं कर सकतीं। एक-एक अंग का यदि विश्लेषण किया जाय तो हमें स्वयं को आश्चर्य की अनुभूति होगी।

आप जीभ को ले लीजिये। जीभ को अनेक कार्य करने पड़ते हैं— बोलना, भोजन को दाँतों के पास पहुँचाना और फिर उसकी पिसाई हो जाने के बाद उसे खाद्य-नली में पहुँचाना, दाँतों में कोई वस्तु अटक जाय तो उसे बाहर निकालना आदि। इन कार्यों के अलावा यह एक और महत्वपूर्ण कार्य भी करती है—शोध-कार्य।

आप अपने सामने आटा, मैदा, नमक, चीनी, ग्लूकोज, चावल का आटा, मिश्री आदि अनेक तरह की पिसी हुई सफेद वस्तुएं रख लीजिए, उन्हें आप जीभ से स्पर्श करा कर तुरन्त बता देंगे कि इसमें कौन-कौन वस्तुएं हैं। क्या दुनिया में ऐसी कोई मशीन है जो स्पर्श करते ही बता दे कि स्पर्श होने वाली वस्तु क्या है ?

अब आप नाक को लीजिये—आपकी आँख पर पट्टी बाँध दी जाये, फिर भी नाक के सामने गुलाब, बेला, प्याज, हींग या इसी तरह की अन्य वस्तुएं लाते ही आप बता देंगे कि किस वस्तु की सुगन्ध आ रही है। आज विश्व में ऐसी कोई मशीन नहीं है जो इसकी कमी को पूरी कर सके। इसी तरह हमारे शरीर में कम्प्यूटर, टेपरेकार्डर, रेकार्ड रूम, कन्ट्रोल रूम, माइक मशीन, सुनने की मशीन, कैमरा, जेनरेटर सेट, क्रेन, ब्वायलर, बिजली के तारों का जाल, पहिये, प्योरिफिकेशन प्लान्ट (शुद्धिकरण यंत्र) आदि ऐसी अनेक मशीनें लगी हुई हैं, जिनके बारे में हमने कभी गम्भीरता से सोचा ही नहीं है। वैज्ञानिकों ने मानव-शरीर के आधार पर अनेक मशीनें बनायीं हैं। वैज्ञानिक यह अनुभव करते हैं कि मानव-शरीर के छोटे से छोटे पुर्जे को भी वैज्ञानिक पद्धति से नहीं बनाया जा सकता। आज के विज्ञान का कम्प्यूटर एक बड़ा आविष्कार है, लेकिन विश्व का सारा धन लगा कर भी मानव-मस्तिष्क जैसा कम्प्यूटर नहीं बनाया जा सकता। हम गीता में पढ़ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं कि भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना विराट् रूप दिखलाया, पर वास्तव में हम सोचें तो भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विराट् रूप नहीं दिखलाया था, बल्कि अर्जुन को उसके स्वयं के ही विराट् रूप का बोध कराया था।

आप वट वृक्ष के बीज को ले लीजिये। यदि इसे उचित स्थान पर लगा दिया जाये तो दुनिया की सभी विराट् शक्तियाँ सूर्य, हवा, जल, जमीन आदि के संरक्षण में वही बीज कुछ ही वर्षों में विराट् रूप धारण कर लेगा। मानव स्वयं एक जीवाणु से बना है, जिसे हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते, पर जीवाणु ने विकास करके मानव-शरीर का जो रूप लिया है, वह अपने आप में विराट् है। परमात्मा ने हमें जो अमूल्य विराट् स्वरूप दिया है, उसके बारे में हमें सोचना चाहिए और उसका अधिक से अधिक उपयोग सत्कार्यों के लिए करना चाहिए। ●

शरीर को सुरक्षित रखने और स्वस्थ बनाने के छः साधारण तथा सरल नियम हैं—(क) शरीर के लिये समुचित खाद्य पदार्थ और जल अवश्य उपलब्ध होना चाहिये (ख) शरीर को प्रचुर मात्रा में सूर्य का प्रकाश और स्वच्छ वायु मिलना चाहिये (ग) शरीर के भीतर के दूषित पदार्थों को बराबर निकालते रहना चाहिये (घ) शरीर को ठंड अथवा गर्म से सुरक्षित रखना चाहिये (ङ) शरीर के लिये प्रतिदिन नियमित रूप से समुचित व्यायाम तथा पर्याप्त विश्राम मिलना चाहिये और (च) शरीर को विजातीय पदार्थों से विषाक्त होने और रोगोत्पादक जीवाणुओं से सुरक्षित करना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफलता की सिद्धि
कुछ प्रेरक प्रसंग

● ● ●

अरविन्द एक अच्छा चित्रकार था। सभी उसके चित्रों की प्रशंसा किया करते थे। एक बार उसके मन में अपने चित्रों की प्रशंसा सुनकर गर्व हुआ। एक सुन्दर चित्र लेकर वह अपने गुरु मधुसूदन के पास पहुँचा। उसके चेहरे का भाव समझ कर गुरु ने उस चित्र के बारे में लोगों की सही राय जानने के लिए उससे कहा कि वह उसे एक चौराहे पर टाँग दे और उसके नीचे यह लिख दे कि इस चित्र में जिसे जहाँ कोई सुधार की आवश्यकता नजर आये, वह वहाँ पर "X" क्रास का निशान लगा दे। अरविन्द ने गुरु के आदेशानुसार चित्र को चौराहे पर लगा दिया। जब शाम को उसने जाकर चित्र को देखा तो उसके चित्र में अनेक जगह "X" के निशान लगे हुए थे। व्यथित मन से वह चित्र को लेकर अपने गुरु के पास पहुँचा। गुरु ने उसे पुनः सुझाव दिया कि वह अब एक ऐसा ही अन्य चित्र उसी स्थान पर और लगा दे और उसके नीचे यह लिख दे कि जिसे किसी सुधार की आवश्यकता नजर आये, वह कृपया उसमें सुधार कर दे। अरविन्द ने पुनः एक चित्र उस स्थान पर लगा दिया। शाम को उसने देखा कि चित्र में कहीं भी कोई निशान नहीं लगा हुआ था। किसी ने उसको छुआ तक नहीं था। वह अपने चित्र को लेकर गुरु के पास पहुँचा तो गुरु ने उसको समझाया कि किसी भी कार्य में अपनी प्रशंसा पर गर्व नहीं करना चाहिए और आलोचना से निराश भी नहीं होना चाहिए। यही अरविन्द आगे चलकर एक विख्यात चित्रकार बना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दूसरी कहानी है। वनबिहारी नामक एक मूर्तिकार था। मूर्तियाँ बनाने का उसे शौक था। उसने अपनी दो पीढ़ियों को मूर्तियाँ बनाते देखा था। उसकी भी इच्छा रहती थी कि अच्छी मूर्तियाँ बनाये। उसके पिता को भी प्रसन्नता थी कि उसक बेटा मूर्तियाँ बनाने में रुचि ले रहा था। पिता रोज ही अपने बेटे की बनायी मूर्ति में कोई न कोई दोष निकालता, उसकी त्रुटियों को समझाता। धीरे-धीरे उसकी मूर्ति एक रुपये के बदले चार रुपये में बिकने लगी, फिर भी उसका पिता मूर्तियों की श्रेष्ठता पर जोर देता रहा। इस तरह थोड़े ही दिनों में उसकी मूर्तियाँ बिकने लगीं आठ रुपये में। उसके पिता की बनायी हुई मूर्तियाँ सिर्फ दो रुपये में ही बिकती थीं, फिर भी पिता वनबिहारी को और अच्छी मूर्तियाँ बनाने के लिए प्रेरित करता था। पिता ने एक बार फिर उसे मूर्तियों को सुधारने के लिए कहा तो वनबिहारी और अधिक न सुन सका। पिता के बार-बार कहने पर उसके मुँह से निकल पड़ा—"आपकी मूर्तियाँ बिकती हैं दो रुपये में और मेरी दस रुपये में।" यह सुनकर पिता निराश हो उठे और उन्होंने गम्भीर मन से कहा—"बेटे, बस अब तेरी मूर्तियाँ और अधिक दामों में नहीं बिक सकेंगी।" कार्य-कसौटी की कोई सीमा नहीं है। उसको निरन्तर ही सुधारने की चेष्टा से आगे बढ़ा जा सकता है। आखिर यही हुआ और वनबिहारी आगे नहीं बढ़ सका—मूर्तिकार के रूप में।

इसी क्रम में एक और प्रसंग है। एक बार किसी शहर के लिए सुयोग्य प्रशासक की आवश्यकता थी। उसके लिए विज्ञापन प्रकाशित किया गया। अनेक आवेदन-पत्र आये। सभी आवेदनकर्त्ताओं को एक निश्चित दिन, निश्चित स्थान पर बुलाया गया। वहाँ रहने के लिए तम्बुओं की व्यवस्था की गयी। वहाँ का दृश्य एक छोटी सेना की टुकड़ी के पड़ाव जैसा नजर आने लगा। अस्थायी तौर पर वहाँ आवास-सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया। अधिकारियों ने जगह-जगह बिजली, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था की थी, लेकिन प्रत्येक व्यवस्था में जानबूझ कर कुछ कमियाँ रखीं थीं। आवेदन-कर्त्ताओं को वहाँ ठहराया गया, ताकि उनके दैनिक कार्यों पर नजर रखी जा सके। काफी संख्या में उच्च शिक्षाप्राप्त आवेदनकर्त्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहाँ ठहरे हुए थे। प्रशासक का चुनाव करने वाले अधिकारीगण, जिनके बारे में किसी आवेदनकर्त्ता को जानकारी नहीं थी, वहाँ घूमते रहते थे। देखा गया कि पानी के नल से पानी गिरने पर भी कोई उसे बन्द करने की चेष्टा नहीं कर रहा था और उसके बगल से निकल जाता था। इसी तरह बिजली के तार झूलते रहने पर भी कोई उसे ऊपर लगाने की चेष्टा नहीं कर रहा था। इसी तरह अन्य गतविधियों पर भी नजर रखी गयी। अधिकारियों ने देखा कि उन आवेदन-कर्त्ताओं में मनमोहन एक ऐसा व्यक्ति था जो इस ओर पूरा ध्यान दे रहा था। वह कहीं कोई त्रुटि देखता तो उसे ठीक करने की चेष्टा करता। बहते हुए नल को बन्द करते समय किसी अधिकारी ने उससे पूछा—"आप तो यहाँ इण्टरव्यू देने आये हैं, फिर क्यों यह कार्य करते हुए घूम रहे हैं?" उसने बताया कि इण्टरव्यू देने के अलावा पूरे समय में उसके पास कोई अन्य काम नहीं है. अतः वह अपने समय के सदुपयोग के लिए ऐसे कार्य करना अधिक उपयुक्त समझता है। ऐसे कार्यों को करने में कोई समय नहीं लगता और परोपकार भी हो जाता है। उसके उत्तर से अधिकारी बहुत प्रसन्न हुआ और उसे ही प्रशासक के पद पर नियुक्त किया गया।

व्यक्ति-परख का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत है। राममोहन एक अच्छे उद्योगपति थे। उनके यहाँ अनेक व्यक्ति काम करते थे। एक बार उनकी पत्नी इस बात को लेकर नाराज हो गयी कि सेठ जी अपने साले को कम वेतन देते थे और मैनेजर को अधिक। राममोहन से उनकी पत्नी ने एक दिन इसका कारण पूछा। उन्होंने इसका जवाब देने के लिए दो दिन का समय माँगा। तीसरे दिन उन्होंने अपनी पत्नी के सामने साले को बुलाया और उसे पास की नदी में जो जहाज आया था, उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा। उसने आकर बताया कि जहाज इग्लैंड से आया है। उन्होंने उसे फिर जहाज में आये हुए सामान का पता लगाने के लिए भेजा। उसने दूसरी बार आकर बताया कि जहाज में नमक लदा हुआ था। कितना नमक आया हुआ है, यह मालूम करने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह तीसरी बार गया। चौथी बार वह यह मालूम करने के लिए गया कि किस कम्पनी का नमक आया है। इस प्रकार कई बार जहाज का निरीक्षण करने पर भी वह उसके बारे में पूरी जानकारी न दे सका। इसके बाद उन्होंने अपने मैनेजर को बुलाया और उससे कहा कि जहाज के बारे में मालूम करके आये। कुछ समय के बाद मैनेजर लौटा और उनके हाथ में कुछ रुपये देते हुए बोला—"सेठजी, जहाज इग्लैंड से आया हुआ था, उसमें दस हजार टन नमक लदा हुआ था, उस नमक को बेचने पर जो मुनाफे की रकम प्राप्त हुई है वह यह रही।" सेठ राममोहन ने अपनी पत्नी से पूछा—"अब बताओ, क्या इन दोनों के काम का अन्तर तुम्हारी समझ में आया?"

एकलव्य और द्रोणाचार्य की कहानी सभी जानते हैं। द्रोणाचार्य ने उसे अपना शिष्य स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की थी, लेकिन एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बना कर, उस मूर्ति को ही गुरु की मान्यता दी और उससे प्रेरणा लेता रहा। वह उस मूर्ति के सामने पूरी लगन और साहस से अभ्यास करता हुआ एक महान धनुर्धर बन गया। सफलता के लिए आवश्यकता है लगन और साहस की। कुछ और कहानियाँ हैं।

तैमूरलंग लड़ाइयाँ हार कर निराश हो गया था। एक रात उसने देखा कि एक चींटी मुँह में दाना लिए दीवाल पर चढ़ने का प्रयत्न कर रही थी। बार-बार नीचे गिरने पर भी वह प्रयत्न करती ही जा रही थी। करीब सत्तर बार गिरने के बाद अन्त में वह ऊपर चढ़ गयी। उस चींटी ने एक जान फूँक दी तैमूरलंग में। वह पुनः युद्ध में जुट गया और अपने लक्ष्य में सफल हुआ।

भगवान श्रीगणेश प्रतीक हैं सफलता के। किसी भी अनुष्ठान के प्रारम्भ में उनकी पूजा होती है। उनकी छोटी आँखे हैं, जो जमीन पर पड़ी सुई को भी देख सकती हैं। उनकी दृष्टि तीक्ष्ण है। उनके बड़े कान हैं, वे छोटी-छोटी बातों पर विचार नहीं करते। उनका बड़ा पेट है—वे सभी बातों को पचा सकते हैं। वे चूहे पर सवारी करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं—जो प्रतीक है छोटे से छोटे प्राणी को साथ में लेकर चलने तथा संतुलन का। चूहा स्वयं प्रतीक है—सतत प्रयत्न का। उनका सिर बड़ा है, जो धीरज और शान्ति से काम करने का प्रतीक है। हाथी का सिर जीवधारियों में सबसे मजबूत है—जो प्रतीक है दृढ़ता का।

व्यक्ति अपने जिन गुणों से महानता के शिखर पर पहुँच सकता है, यदि उन गुणों को सावधानी और विवेक के साथ ग्रहण किया जाये तो जीवन में सफलता ही सफलता दिखायी देगी। महानता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देने वाली वस्तुएँ हमारे सामने ही हैं, केवल आवश्यकता है उन वस्तुओं में छिपे हुए मूक संदेश को सुनने-समझने की। इसके लिए विवेक को प्रखर बनाना सभी दृष्टियों से फलदायी है ●

अथर्व वेद में कहा गया है—"मेरे दाहिने हाथ में पुरुषार्थ है और बाँयें हाथ में सफलता।" इस उक्ति की सत्यता को परखने के लिये हमें अपना जीवन में प्रतिक्षण तत्पर रहना चाहिये। सफलता के सूत्र हमारे इर्द-गिर्द बिखरे पड़े हैं। हमें उन्हें पहचानने, अपनाने और उपयोग में लाने की बात सोचनी होगी। जो कुछ हम देखते हैं, सुनते हैं उनमें से तत्त्वपूर्ण चीजों को ग्रहण करना फलदायी है। केवल दर्शक या श्रोता बनने से हमारे हाथ कुछ भी नहीं लग सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुख - दुःख एक कल्पना

● ●

जब से सृष्टि की रचना हुई है, तब से सुख और दुःख का सम्बन्ध जीवधारियों के साथ रहा है। सुख और दुःख मन के विचार हैं, कल्पना हैं। जो स्थिति किसी को सुख का अनुभव कराती है, उसी स्थिति में वह दुःख का अनुभव भी करने लग जाता है।

जिस तरह हाथ, पैर, पेट, सिर, मुँह आदि के समूह से शरीर बना है, उसी तरह आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, खुशी, सन्तोष, शान्ति आदि से बना है सुख। दुःख का जन्म कलह, क्लेश, कष्ट, संताप, असन्तोष, अशान्ति, उद्वेग आदि के परस्पर मिलने से होता है। देखा जाय तो दुःख का जन्म ईर्ष्या के कारण ही होता है। जब हम अपनी स्थिति की तुलना दूसरों की स्थिति को देखकर करते हैं, तभी हमारे मन में सुख-दुःख की स्थिति पैदा होती है, इसलिए भगवान् मनु ने कहा है "सन्तोष सुख का मूल है और असंतोष दुःख की जड़ है।"

एक बार एक व्यक्ति भूख से तड़पता हुआ, एक गाजर खाता हुआ जा रहा था। खाते-खाते वह अपने भाग्य के बारे में भी सोचता जाता था। उसके मन में ये विचार आ रहे थे कि इस दुनिया में उसके बराबर दुःखी मनुष्य नहीं है। इन्हीं विचारों में खोये हुए उसने गाजर के भीतर की डण्डी रास्ते पर फेंक दी। उसने देखा कि एक दुबला-पतला व्यक्ति तुरन्त उस गाजर की डण्डी की तरफ लपका और उसे उठाकर खाने लगा। उस व्यक्ति को यह अनुभव हुआ कि गाजर को खाने वाले व्यक्ति के चेहरे पर संतोष झलक रहा था। उसे यह देखकर कुछ क्षणिक सुख मिला कि दुनिया में उससे दुःखी लोग भी हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राम किसी कार्यालय में काम कर रहा था। मालिक ने उसके वेतन में एक सौ रुपये की वृद्धि कर दी। राम की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह घर पर मिठाईयाँ लेकर गया। घर वाले भी खुश थे। दूसरे दिन राम कार्यालय में आया तो उसे मालूम हुआ कि उसके पास बैठने वाले मोहन के वेतन में एक सौ पच्चीस रुपये की वृद्धि की गई थी। उसे यह मालूम होते ही उसकी सारी खुशी जाती रही। उसकी प्रसन्नता दुःख में वदल गयी।

अकबर-बीरबल के कई किस्से प्रचलित हैं। सुख-दुःख के बारे में एक घटना बड़ी ही दिलचस्प है। एक बार बीरबल को भारत से बाहर भ्रमण के लिए जाने का अवसर मिला। दरबार के साथियों ने अपनी-अपनी पसन्द की चीजें लाने के लिए उनसे कहा। बीरबल बादशाह से भी मिलने गया। बादशाह बीरबल से कुछ ऐसी ही समस्याएँ हल करवाना चाहते थे, जिसे आदमी सुलझा न सके। हँसी के बीच बादशाह ने कहा कि बीरबल हमारे लिए एक ऐसी वस्तु लाना जिसे देखकर सुखी व्यक्ति दुःख का अनुभव करे और दुःखी व्यक्ति सुख का। बीरबल यात्रा पर चले गये। अपने साथियों की पसन्द की चीजें लेने में बीरबल को कोई मुश्किल नहीं हुई, किन्तु बादशाह ने जो वस्तु माँगी थी, वह बीरबल की समझ में नहीं आ रही थी। अन्त में एक दुकान पर बीरबल की नजर एक ऐसी वस्तु पर पड़ी कि उसको लेने के लिए उनका मन उतावला हो उठा। बीरबल को अपनी मनपसन्द वस्तु मिल गई थी।

यात्रा से लौटने पर सभी साथियों को बीरबल ने अपनी-अपनी पसन्द की चीजें भेंट कर दीं, पर सबकी आँखें बादशाह को भेंट दी जाने में वाली वस्तु की ओर लगी हुई थीं। बीरबल के जाने के बाद बादशाह ने जो वस्तु मँगाई थी, उसकी चर्चा जोरों पर थी। सभी की उत्सुकता उसको देखने के लिए बनी हुई थी। स्वयं बादशाह सलामत भी उस समय का इन्तजार कर रहे थे जब बीरबल उन्हें अपनी मनचाही वस्तु भेंट करे। बीरबल बादशाह के पास पहुँचा। उसने मखमल से ढँकी एक छोटी सी पेटी खोली। उस पर नजर पड़ते ही बादशाह ने बीरबल की ओर मुस्कुराते हुए देखा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी दरबारियों को वह अनमोल वस्तु दिखलाई। उस पेटी में सुन्दर अक्षरों में एक संगमरमर के टुकड़े पर खुदा हुआ था—"ये दिन हमेशा नहीं रहेंगे"। यह एक छोटा-सा वाक्य दुःखी मनुष्य को सुख का भविष्य दिखलाता है और सुखी को आगे की चेतावनी देता है—तैयार रहने के लिए।

सुख-दुःख के सम्बन्ध में एक और प्रसंग आता है। एक भक्त ने भगवान की आराधना की। भगवान ने प्रसन्न होकर उसे शंख दिया और कहा कि इस शंख को बजाकर वह जो माँगेगा, वही मिलेगा, पर उसके पड़ोसियों को उससे दुगुना मिलेगा। वह भक्त प्रसन्नचित्त घर आया। उसने एक सुन्दर दो-मंजिले मकान की कामना से शंख बजाया। चन्द क्षणों में उसने देखा कि वह जहाँ टूटी-फूटी झोपड़ी में था, उस जगह पर अब एक दो-मंजिला मकान हो गया है। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। मगर जब वह घर से बाहर निकला तो अपने अगल-बगल में चार-मंजिले मकान देख कर उसका सुख दुःख में बदल गया। घर से बाहर आकर देखने पर उसे भगवान के वचन याद आये। वह ईर्ष्या से जल उठा। उसे इस स्थिति में अपार दुःख का अनुभव हो रहा था। वह इसे और सहन न कर सका। उसके मन का राक्षस जाग उठा। वह तुरन्त अपने मकान के छोटे-से मन्दिर में गया और भगवान से प्रार्थना करने लगा कि उसके घर के आगे चार फीट का एक गड्ढा हो जाये। शंख-ध्वनि करते ही उसके घर के आगे चार फीट का तथा पड़ोसियों के घर के आगे आठ फीट का गड्ढा हो गया। उसने पुनः प्रार्थना की—भगवान, मेरी एक आँख फूट जाये और शंख ध्वनि करते ही उसकी-आँख फूट गई तथा पड़ोसियों की दोनों आँखें। अब वह घर के बाहर फाटक पर आकर बैठ गया और पड़ोसियों को गड्ढे में गिरते देख कर सुख का अनुभव करने लगा। दुःख का प्रधान कारण ईर्ष्या ही है।

दूसरों को सुखी करने के लिए जो व्यक्ति दुःख सहते हैं, उन्हें उस स्थिति में भी सुःख का ही अनुभव होता है। देश की आजादी के लिए बर्फ की शिला पर सो कर कोड़े खाने वाले देश के सपूतों ने पुनः जन्म लेकर सभी प्रकार का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कष्ट सहने की कामना की। उन्होंने रोंगटे खड़े कर देने वाले कष्ट भी हँसते-हँसते सहे।

कबीर दास ने सुख-दुःख के बारे में कहा है—

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय,
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय।

वास्तव में मनुष्य जब अपने को सुखी अनुभव करने लगता है, तब वह सबको भूल जाता है। उस समय अपने वे रिश्तेदार या साथी याद नहीं आते, जिन्हें उसकी सहानभूति की जरूरत है। जब स्थिति बदल जाती है तब उस व्यक्ति के लिए कोई भी अपनी सद्‌भावना प्रदर्शित नहीं करता।

मनुष्य स्वयं भी उसी को ज्यादा याद करता है जो, अधिक सम्पन्न और सुखी है। उसे वे व्यक्ति कम याद आते हैं, जिन्हें सहारा दिया जाना चाहिए। वर्तमान आर्थिक युग में मँहगाई-बेरोजगारी और विभिन्न तरह के खर्चों के कारण अधिकतर व्यक्ति अपने को दुःखी ही अनुभव कर रहे हैं। शास्त्र कहते हैं कि आनन्द अपने भीतर ही निवास करता है, पर मनुष्य उसे बाह्य सुख में खोजता फिरता है। दूसरों को सुखी रखने के लिए जो स्वयं दुःख सहे वह शिव है। स्वयं को सुखी रखने के लिए दूसरों को दुःख देने वाला संसारी जीव है। ईश्वर ने जो दिया है उसमें जो आनन्द माने वह धनी है। इसके विपरीत सोचने वाला ही दुःखी है •

सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख इस तरह आते रहते हैं जैसे पहिये की धुरी के ईर्द-गिर्द अरे घूमते रहते हैं। दुःख में दुःखी और सुख में सुखी रहनेवाला लोहे के समान है; दुःख में भी सुखी रहने वाला सोने के समान है; सुख-दुःख में एक जैसा रहने वाला रतन के समान है और जो सुख-दुःख की भावना से परे है, वह देवों से भी उच्च कोटि का है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्लादीन के जादुई चिराग का रहस्य

● ● ●

सुबह के चार वजे थे। मैंने फटे कपड़े पहने एक बूढ़े आदमी को सामने खड़े देखा। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी, कमर झुक गई थी और बाँयें हाथ में एक गठरी लटक रही थी। ऐसे असमय उसको अपने सामने खड़ा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। कौतूहलवश मैंने उस अजनबी से उसका नाम पूछा। उसने बताया कि वह अल्लादीन था, जिसके जादुई चिराग की कहानी सारी दुनिया के लोग बड़े चाव से पढ़ते हैं।

अल्लादीन का नाम सुनते ही मेरा सारा शरीर रोमांचित हो गया और मैं पसीने से तर-ब-तर हो गया। उसने मुझे समझाया कि घबराने की कोई बात नहीं, वह तो एक मित्र की तरह मुझसे मिलने आया था।

मैंने अल्लादीन से पूछा कि उसकी वह अजीबो-ग़रीब हालत कैसे हो गयी और उसके जादुई चिराग का रहस्य क्या था। उसने बताया कि कहानियों और चित्रों में उसके बारे में जो प्रदर्शित किया गया था, उसमें एक खास रहस्य छिपा हुआ था। वही रहस्य, जो उसने कभी किसी को नहीं बताया, मुझे बताने के लिए आया था। मेरी आँखें उसके उदास चेहरे की ओर लगी हुई थीं। वह बहुत धीरे-धीरे बोल रहा था। उसकी बातें सुनने के लिए मुझे अपनी सारी शक्ति को एकाग्र करना पड़ रहा था।

उसने बात आगे बढ़ायी—"मैंने एक छोटा-सा पुराना मकान खरीदा था। मकान मरम्मत कराने के लिए मैंने मजदूर लगा रखे थे। एक दिन अचानक फावड़े से किसी धातु के टकराने की-सी आवाज आयी। मैंने देखा, कुछ छोटे-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे टुकड़े वाहर निकले थे, जिनपर मिट्टी जम गयी थी। उत्सुकतावश मैंने उन ढेलों को पानी से साफ किया और जब उन्हें रगड़कर साफ किया तो मेरी आँखें आश्चर्य से फैलती चली गयीं। वे मिट्टी के ढेले नहीं वल्कि सोने की मोहरें थीं, जो जमीन में किसी समय गाड़ी गयी थीं। मैंने मजदूरों को तुरन्त काम वन्द करने के लिए कहा। उस समय मेरा दिमाग बड़ी तेजी से काम कर रहा था। मैं यह विल्कुल नहीं चाहता था कि इस बात की किसी को जरा भी भनक लगे। रात भर मेरा दिमाग़ मशीन की तरह काम करता रहा। मेरे सामने तरह-तरह की समस्याएँ खड़ी हो रही थीं। मैंने सोचा कि यदि यह खबर फैल जायेगी तो मेरे पास वह अपार धन सुरक्षित नहीं रह सकेगा। वह धन या तो वहाँ के शासक के क़ब्जे में चला जायेगा या फिर मैंने जिससे यह मकान खरीदा है, वह दावा खड़ा कर देगा और इस तरह से मेरे ऊपर नयी आफत आ जायेगी।

सोचते-सोचते मेरे दिमाग मे एक वात आई। मैंने अपने यहाँ कई हट्टे-कट्टे जवानों को अपनी नौकरी पर रख लिया। मैंने वहाँ एक ऐसी घण्टी लगायी, जिसकी स्विच दबाने पर आवाज के साथ रोशनी होती थी। फिर मैंने अपने इन जवानों को समझा दिया कि ज्योंही घण्टी बजे और रोशनी जले, वे मेरे सामने आ जायें और जो भी उनसे कहा जाय, करें। अलग-अलग टेक्निकल विशेषज्ञों को भी नौकरी पर रख लिया गया। मेरे पास इतना धन था कि मैं अपनी इच्छानुसार टेक्निशियनों और विशेषज्ञों को नौकरी देने में समर्थ था। मैंने अपने जवानों को विशेष ट्रेनिंग दी तथा उनके द्वारा कुछ ऐसी अजीबो-गरीव हरकतें करवायीं कि धीरे-धीरे सभी जगह यह प्रचार हो गया कि मेरे पास ऐसा कोई जादुई चिराग है, जिसको रगड़ने से एक जिन सामने आता है। उसे जो भी हुक्म दिया जाता है, उसे वह पूरा कर देता है। मैंने जादूगरों को भी नौकरी पर रख दिया और उनके द्वारा तरह-तरह के जादुई करिश्मे रोज करवाता रहा। लोगों पर मेरा भय इतना जम गया था कि किसी ने भी असलियत जानने की चेष्टा नहीं की। मैंने हजारों मजदूरों को रखकर रातोरात नये मकान का निर्माण कराया और तरह-तरह के वाहन बनवाये, जिनके सहारे जहाँ भी इच्छा होती, मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुरन्त पहुँच जाता था। मैं जिस चीज की इच्छा करता, उस चीज को प्राप्त होने में कोई विलम्ब न लगता, क्योंकि मेरे पास उस समय इतना धन और इतने साधन थे। मेरा स्वभाव ऐसा बन गया था कि मैं किसी भी काम में थोड़ी सी देरी भी बरदाश्त नहीं करता था, इसलिए मेरे यहाँ काम करने वाले इस बात से बहुत भयभीत रहते थे कि कहीं मैं उनपर किसी भूल के कारण नाराज न हो जाऊँ।

आमोद-प्रमोद व भोग-विलास में समय कटते देर न लगी। मनचाही सभीं बातें मैंने जीवन में पूरी कीं। एक दिन अचानक यह देखकर मेरे पाँव तले की जमीन खिसक गयी कि जिस जगह से खजाना खोदकर निकाला जा रहे थे, अब उसके नीचे से खजाना न निकलकर मिट्टी व पत्थर का ढेर निकल रहा था। मेरे शरीर की सारी शक्ति अचानक गायब हो गयी और मुझे ऐसा लगा कि एक ही क्षण में मेरी उम्र बीस वर्ष बढ़ गयी है। मेरा तना हुआ शरीर झुक गया और सिर के सारे बाल सफेद हो गये। इस परिवर्तन का राज मुझे छोड़कर कोई नहीं जानता था। अब मेरे पास यह शक्ति नहीं रही कि मैं अपने सारे विशेषज्ञों, टेकनेशियनों व जवानों को नौकरी पर रख सकूँ। मुझे सभी को जवाब देना पड़ा। उनकी तनख्वाह तथा बकाया चुकाने के लिए मुझे अपना मकान बेच देना पड़ा। मैं पुनः फटेहाल बनकर अपनी पुरानी झोंपड़ी में आ गया। अपना चेहरा बचाने के लिए मुझे यह प्रचार करना पड़ा कि जो जादुई चिराग मेरे पास था, वह भूल से मेरी पत्नी ने किसी और को दे दिया। अब जिन को अपने पास बुलाकर उससे काम करवाने की शक्ति मुझमें नहीं रह गयी।''

अल्लादीन की कहानी सुनकर मैंने एक गहरी साँस ली। मेरे मन में कई बातें जानने की उत्सुकता जाग उठी। मैंने अल्लादीन से पूछा—"तुम्हारी सारी कहानी में यह बात कहीं नहीं आती कि तुमने जादुई चिराग के जिन का उपयोग दूसरों का दुःख मिटाने के लिए भी किया हो। तुम इतनी सारी मिठाईयाँ, इतने सारे व्यंजन अपने लिए मँगाते थे, तो क्या उसका थोड़ा भी हिस्सा दूसरे भूखे के लिए नहीं मँगा सकते थे? क्या तुम अपनी ही तरह दूसरों के लिए भी मकान नहीं बना सकते थे?'' अल्लादीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी बात को सुनकर उदास हो गया। उसने बड़े दुःखी मन से बताया कि दूसरों के लिए कुछ करने या इसके बारे में सोचने की बात उसके दिमाग में ही कभी नहीं आयी।

मैंने कौतूहलवश पूछा—"जिस तरह का जीवन तुमने व्यतीत किया था, क्या उसकी एक झलक मुझे भी दिखा सकते हो ?" मेरी बात सुन करके उसने मुझे अपने साथ चलने के लिए कहा। हम दोनों चलकर एक बहुमंजिले मकान के सामने आ खड़े हुए। उसने अपने झोले में से एक चादर निकाल कर मुझे दी तथा एक चादर अपने लिए रख ली। उसने चादर ओढ़ लेने के लिए कहा। उस चादर में यह विशेषता थी कि उसको ओढ़ने वाले को दूसरे व्यक्ति नहीं देख सकते थे, किन्तु वह सब कुछ देख सकता था। हम दोनों चादर ओढ़कर आगे बढ़े। अल्लादीन ने मेरा हाथ पकड़कर एक दृश्य देखने के लिए एक ओर इशारा किया। मैंने मुड़कर देखा तो मेरी आँखों के सामने एक सुन्दर हवेली का भीतरी भाग था। अचानक किसी कमरे में से किसी ने घण्टी बजायी। घण्टी के बजते ही कमरे के दरवाजे पर रोशनी जल उठी। रोशनी जलते ही एक व्यक्ति कहीं से आकर कमरे में गया। कुछ क्षण बाद वह बाहर आया और कहीं से जाकर प्लेट में तरह-तरह की मिठाइयाँ और चाय लाकर फिर उसी कमरे में चला गया। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि एक सूटेड-बूटेड व्यक्ति उसी कमरे से बाहर निकला और अपने लिए तैयार खड़ी मोटर में बैठकर, अपने मकान के पिछले हिस्से में गया, जहाँ उसके लिए एक जहाज खड़ा था। कुछ ही क्षणों मे वह जहाज में बैठकर हमारी आँख से ओझल हो गया। अल्लादीन ने अपने जीवन में जो वैभव देखे थे, वे सभी वहाँ देखने को मिले। अल्लादीन को अपने पुराने दिन याद आ गये और उसकी आँखों से पानी बहने लगा। मैं उसके साथ अपने घर लौटा। मैंने उससे अपने यहाँ चाय पीने का अनुरोध किया। चाय पर उससे कई तरह की बातें होने लगीं। उसने अपने जीवन के अनुभव बताते हुए कहा कि उसकी ही तरह आज कितने धनी ऐसे हैं जो अपने धन रूपी जादुई चिराग से अपनी सारी इच्छाएँ पूरी कर रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसने कहा—"मैंने अपने जीवन में सबसे बड़ी गलती यही की कि मैंने कभी भी दूसरों के हित की बात नहीं सोची। यदि मैं अपने धन से उस समय कोई स्कूल, कालेज, अस्पताल, धर्मशाला य मन्दिर बनवा सका होता तो मेरे पास पैसा न रहने पर भी लोग उसकी मरम्मत करवाते, देखभाल करवाते, देखभाल करते और इस तरह मेरा नाम सदा सबकी जबान पर रहता। दीन अवस्था में दर-दर की ठोकरें खाते रहने पर भी लोग मुझे सम्मान की दृष्टि से देखते।" मैंने देखा कि पश्चाताप के आँसू उसकी आखों से लगातार बह रहे थे। उसको देखकर मैं भी अपने आप को नहीं रोक सका और मेरी भी आँखों से आँसू बहने लगे।

तभी अल्लादीन की नजर मेरे कमरे की दीवार पर टँगी हुई लक्ष्मी की तस्वीर पर जाकर टिक गई। वह बड़े ध्यान से लक्ष्मी और उनके वाहन उल्लू को देखता रहा। फिर उसकी आँखें उस तस्वीर के पास ही झूलती हुई एक दूसरी तस्वीर पर पड़ी जो गरुड़ पर बैठे हुए लक्ष्मी-नारायण की थी। अल्लादीन को यह समझते देर नहीं लगी कि धन और सौभाग्य की देवी लक्ष्मी जब अकेली कहीं जाती हैं तो वे उल्लू पर सवार होती हैं, जो अशुभ अनैतिकता और अनिष्टों का प्रतीक है। किन्तु वही लक्ष्मी जब श्रीनारायण (सद्प्रवृत्तियों और सत्कर्मों) के साथ आती हैं तो उनका वाहन गरुड़ होता है, जो मंगल, पुण्य, परोपकार और अक्षय कीर्ति का प्रतीक है। बात पूरी तरह से समझ में आते ही अल्लादीन इतना जोर से हँसा कि उसकी आवाज मेरे कमरे से गूँज उठी। वह बड़ी देर तक हँसता ही रहा। मेरी आँख अचानक खुल गयी। सदियों पहले का वह अद्भुत इन्सान अल्लादीन एकाएक गायब हो गया, लेकिन दीवार पर टँगी लक्ष्मी की तस्वीर हवा में खिल रही थी—अल्लादीन के चिराग का रहस्य अपने में समेटे हुए। ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिक्षाप्रद एकांकी

कबिरा गरब न कीजिये

● ● ●

(नवयुवक रामू नौकरी की तलाश में घूम रहा है। पुरानी फटी धोती, हाफ शर्ट और पैरों में पुरानी चप्पल पहने हुए वह परेशान दिखाई पड़ता है। उसके सिर के बाल उलझे हुए हैं। सूखे होठों और मुरझाये चेहरे वाले इस युवक को देखकर ऐसा लगता है जैसे वह काफी थका-हारा और भूखा-प्यासा है।)

रामू—(चलते हुए ठहर जाता है और अपने आप से कहता है) पढ़ना-लिखना सब बेकार हो गया। एक महीने से चप्पल घिस रहा हूँ नौकरी की तलाश में, मगर वाह री तकदीर ! जहाँ जाता हूँ एक ही जवाब मिलता है, कोई जगह खाली नहीं हैं। (ऊपर देखकर) भगवान, क्या सचमुच तेरी दुनिया में मेरे लिए कोई भी जगह खाली नहीं है? दो दिनों से अन्न का एक भी दाना पेट में नहीं गया। भूख से अँतड़ियाँ ऐंठ रही हैं। दया की एक दृष्टि मुझ पर भी डालो प्रभो, अब तो बस तुम्हारा ही सहारा है।

(सामने एक गद्दी देख कर खड़ा हो जाता है। उसके सूखे चेहरे पर आशा की हल्की-सी झलक दिखाई पड़ती है)

रामू—(स्वगत) यह गद्दी तो किसी बड़े सेठ की मालूम होती है, जरा यहाँ भी किस्मत आजमा लूँ, कौन जाने यहीं कोई काम मिल जाय।

(गद्दी में जाता है। सेठजी पगड़ी बाँधे, कीमतीं चश्मा लगाये, बन्द गले का कोट और बढ़िया धोती पहने कोई खाता ध्यान से देख रहे हैं। गद्दी में दो मुनीम अपने काम में व्यस्त हैं)

रामू—(सेठजी के सामने हाथ जोड़ कर) नमस्ते सेठ जी !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठजी -(खाते पर से दृष्टि हटाकर रामू की ओर आँख उठाते हुए) कौन हो आप ? कैसे आना हुआ ?

रामू—जी, मेरा नाम रामू है। नौकरी की तलाश में हर जगह निराश होकर आपकी शरण में आया हूँ। मुझे कोई काम चाहिए। मैं बेकार हूँ। नौकरी की मुझे सख्त ज़रूरत है।

सेठजी—(चश्मा सीधा करते हुए) देखो भाई, ज़माना खराब है। आजकल नये-नये आदमी को काम पर रखना, जान बूझ कर सिर दर्द मोल लेना है। नौकरी के लिए गिड़गिड़ाने वाले नौकरी पाते ही पचासों तरह के झगड़े खड़े करने लगते हैं और मालिकों की नींद हराम कर देते हैं। मैं तो कई बार धोखा खाने के बाद अब किसी आदमी को काम देने का साहस ही नहीं कर पाता हूँ। मुझे दुःख है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता हूँ, तुम कहीं और काम तलाश करो।

रामू—(पुनः हाथ जोड़कर दुःख भरे स्वरमें) मैं उस किस्मका आदमी नहीं हूँ सेठजी, मुझपर विश्वास कीजिये। मैं आपके उपकार का बदला मेहनत, सच्चाई और ईमानदारी से चुकाऊँगा। दया करके मुझे कोई काम देकर दर-दर की ठोकरें खाने से बचा लीजिये।

सेठजी—(रामू को सिर से पाँव तक देखकर कुछ सोचते हुए) तुम क्या काम कर सकते हो ?

रामू—कोई भी काम। मैं काम से नहीं घबराता हूँ, मेरी नजर में कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं है। आप जो भी सेवा मुझसे चाहें, ले सकते हैं।

सेठजी—देखो भाई, फिलहाल मेरी गद्दी में झाड़ू लगाने वाला नौकर चला गया है, उसकी जगह मैं तुम्हें दे सकता हूँ, मगर सफाई में कोई कमी नहीं होनी चाहिए। मुझे गन्दगी बिल्कुल पसन्द नहीं है। अगर तुम्हें मंजूर हो तो कल से काम शुरू कर दो।

रामू—मुझे मंजूर है। मैं आज से ही अपना काम सँभाल लेता हूँ।

(कोने में रखी झाड़ू उठा लेता है और गद्दीके सामने वाली खाली जगह बुहारता है)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठजी—(दोनों मुनीमों से) मैं जरा काम से जाता हूँ, यह आदमी गद्दी झाड़ ले तो इससे बगल वाला ऑफिस का कमरा भी साफ करा लीजियेगा।

(सेठजी चले जाते हैं। रामू सफाई करता रहता है। दोनों मुनीम भी उठकर बाहर जाते हैं। रामू गद्दी साफ करके वहीं बैठकर अखबार पढ़ने लगता है। सेठजी लौटकर गद्दी में आते हैं)

सेठजी—(रामू को देख कर) कहाँ तक पढ़े लिखे हो तुम ? तुमने अपनी पढ़ाई के बारे में तो मुझे कुछ भी बताया ही नहीं।

रामू—(अखबार समेटते हुए सकुचा कर) जी बस थोड़ा बहुत पढ़-लिख लेता हूँ, बताने लायक कोई बात होती तो जरूर बताता।

सेठजी चलो कोई बात नहीं, जरा अखबार ही पढ़कर सुनाओ मुझे।

(रामू अखबार खोलकर पढ़ता है।

रामू—नई दिल्ली। केन्द्रीय खाद्य मन्त्री ने कहा है कि दिनोंदिन बढ़ती मँहगाई से सरकार बहुत चिन्तित है। मुनाफाखोरों और जमाखोरों के खिलाफ कार्यवाही करने से लिए आवश्यक कदम शीघ्र ही उठाये जा रहे हैं। खाद्यान्न की बढ़ती हुई कीमतों पर रोक लगाने के लिए......

सेठजी—(बीच में ही बोलते हुए) बस-बस मैं समझ गया, तुमने अपनी योग्यता मुझसे छिपाई है। तुम अच्छे-खासे, पढ़े-लिखे नौजवान हो। तुम्हें नौकरों का काम देकर हमने भूल की है। कल से तुम चिट्ठियाँ लिखा करो। मैं अपनी निजी चिट्ठियाँ तुमसे ही लिखवाऊँगा।

रामू—(आँखें नीची करके) आप उदार ही नहीं, पारखी भी है सेठजी, मैं आप का उपकार नहीं भूलूँगा।

(सेठजी कुछ पत्र निकाल कर रामू को अपने निकट बुलाते हैं)

सेठजी—देखो, यह पत्र पढ़ो। यह देहरादून के एक व्यापारी का है। माल मिलने में देर होने की वजह से यह नाराज है। इसे जरा अच्छा - सा पत्र लिखना है। इसे जवाब लिखो।

(रामू कागज कलम लेकर पहले कलम होठों से लगाकर पत्र पढ़ता है, फिर पत्र लिख कर सेठजी के आगे बढ़ाता है)

सेठजी—(पत्र पूरा पढ़कर) शाबाश, तुमने तो इतना बढ़िया जवाब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिखा है कि मैं तुम्हारी जितनी तारीफ करूँ, कम है। कल से तुम मुनीम की जगह पर बैठोगे।

(रामू दोनों हाथ जोड़कर सेठजी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। सेठ जी उठकर जाते हैं। उनके जाने के बाद रामू भी चला जाता है।

(दृश्य परिवर्तन)

(दोनों मुनीम आकर अपनी जगह बैठते हैं। सेठजी का प्रवेश)

सेठजी—(पहले मुनीम से) भँवर लाल जी, यह आदमी तो बड़ा होशियार निकला। मैंने समझा था कि यह कम पढ़ा-लिखा नौजवान है, नौकरों का काम मेहनत से कर लेगा मगर यह तो मेहनती ही नहीं बल्कि योग्य और समझदार भी हैं। मैंने उसे हेड मुनीम बनाने का विचार किया है।

पहला मुनीम—(दूसरे मुनीम की ओर अप्रसन्नता से देखकर फिर सेठजी की ओर मुड़ता है) आपकी मेहरबानी है सेठजी, मालिक की नजर में जो चढ़ जाय उसे हिमालय की चोटी पर पहुँचने में भला कितनी देर लग सकती है।

दूसरा मुनीम—कुछ भी हो, उस पर इतनी जल्दी भरोसा करना मुझे तो नहीं जँचता है, वैसे मालिक चाहते हैं तो फिर हमलोगों को क्या आपत्ति हो सकती है।

सेठजी - आप लोग इस आदमी को पहचान नहीं पाये हैं। मैंने उसे ठीक से परखा है। हाथ कंगन को आरसी क्या? काम तो करने दीजिये उसे, चार दिनों में ही पता लग जायेगा कि वह कैसा आदमी है।

(रामू का प्रवेश)

सेठजी—आओ रामू, आज से मैंने तुम्हें हेड मुनीम नियुक्त किया है। ये दोनों मुनीम तुम्हारे सहायक के रूप में काम करेंगे। अपना काम ठीक से सँभाल लो।

रामू—(हाथ जोड़कर) सेठजी, आप ने तो मुझ पर इतनी बड़ी कृपा की है कि आपके इस उपकार का बदला मैं जीवन भर नहीं चुका सकूँगा। भगवान से मैं हर दिन यही प्रार्थना करूँगा कि मुझे अपनी जिम्मेदारी निभाने की शक्ति दें।

(रामू हेड मुनीम की जगह बैठता है)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठजी—अभी मैं एक जरूरी काम से बैंक जा रहा हूँ। तुम भी चलो मेरे साथ। (उठते हैं) (रामू सेठजी के साथ उठकर बाहर जाता है)

दूसरा मुनीम—हो गई छुट्टी भँवर लाल जी, यह कल का छोकरा हमारा अफसर बन बैठा और हम दस साल इस गद्दी में बैठने के बाद भी जहाँ थे, वहीं रह गये।

पहला मुनीम—(लम्बी साँस लेकर) देखते जाओ करोड़ीमल जी, यह चार दिन की चाँदनी है। मैं इस रामू के बच्चे का पत्ता ऐसा गोल कराऊँगा कि जिस तरह फटी चप्पल फटकारता हुआ आया था, वैसे ही यहाँ से चलता बनेगा। सेठजी इसे खुद धक्के देकर न निकालें तो मेरा नाम भँवरलाल नहीं।

(दोनों काम करने लगते हैं। थोड़ी देर में सेठजी अकेले गद्दी आते हैं)

सेठजी—(दोनों मुनीमों की ओर देखकर)—क्या हुआ, सन् अठहत्तर का तलपट बना? पंद्रह दिनों से आप दोनों मगजमारी कर रहे हैं मगर अब तक चौदह सौ का फर्क नहीं निकाल पाये। पता नहीं कैसे काम कर रहे हैं आप लोग। अब मुझे रामू को यह सौंपना पड़ेगा।

(रामू आता है और ऑफिस में जाकर दरवाजा बन्द कर लेता है)

पहला मुनीम—लम्बा-चौड़ा हिसाब है सेठजी, तलपट बनाने में टाइम तो लगता ही है। जब हम जैसे पुराने मुनीमों को इतनी देर लग रही है तो हेड मुनीम जी भला कैसे जल्दी बना लेंगे। उन्हें तो खाता बही का काम अभी कुछ दिन सीखना होगा।

सेठजी—रामू मेहनती है। वह जो भी काम हाथ में लेगा, उसे पूरा करके ही दम लेगा।

पहला मुनीम—आप कहते हैं तो मुझसे भी सब बात कहे बिना अब रहा नहीं जाता है। हेड मुनीम जब से आये हैं, दोनों हाथों से पैसे बटोरने में जुट गये हैं। आप को तो विश्वास नहीं होगा मगर मैंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा है।

सेठजी—(त्योरियाँ चढ़ाकर) क्यों झूठ इल्जाम लगा रहे हैं उस गरीब पर? क्या सबूत है आपके पास कि वह पैसे बना रहा है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहला मुनीम—भँवरलाल आपका नमक खाता है मालिक, बिना सबूत के मैंने यह बात आपसे नहीं कही है। आप जरा ऑफिस में घुसकर देखिये कि हेड मुनीम जी क्या कर रहे हैं, आपको अभी असलियत मालूम हो जायेगी। (सेठजी उठते हैं और आफिस का दरवाजा खटखटाते हैं। कुछ क्षणों तक भीतर से कोई आवाज नहीं आती। लगातार दरवाजा पीटने के बाद रामू भीतर से बोलता है)

रामू—(भीतर से) क्या बात है, कौन दरवाजा पीट रहा है?

सेठजी—दरवाजा खोलो रामू।

पहला मुनीम—दरवाजा जल्दी खोलिये, जरूरी काम है।

रामू—थोड़ी देर ठहरिये, अभी खोलता हूँ।

सेठजी—दरवाजा खोलकर बातें करो रामू, वरना मैं दरवाजा तोड़कर अंदर आ जाऊँगा। (दरवाजा खुल जाता है। रामू एक छोटे-से सन्दूक को झट नीचे रख कर उस पर बैठ जाता है)

सेठजी—यह कैसा बक्स है? क्या रख रहे हो इसमें? दिखाओ मुझे।

रामू—(बक्स पर बैठे हुए) इस सन्दूक में आपके काम की कोई चीज नहीं है सेठजी।

सेठजी—(तेज आवाज में) पहेलियाँ मत बुझाओ, बक्स खोलो, इसमें जो कुछ भी है उसे दिखाना ही होगा मुझे।

पहला मुनीम—देख लिया न मालिक मैंने जो कुछ आपसे कहा था, अब तो विश्वास हुआ न? इसने बेईमानी की कमाई इसी बक्स में बन्द कर रखी है और अब उसे दिखाने में आनाकानी कर रहा है।

सेठजी—(रामू से) तुम बक्स पर से हटते हो या मैं तुम्हें धक्के देकर यहाँ से बाहर निकालूँ?

(रामू बक्स पर से उठकर एक ओर खड़ा हो जाता है)

रामू—लीजिये सेठजी, यह रहा बक्स, देख लीजिये जो कुछ आपको देखना है। (सेठजी लपक कर सन्दूक खोलते हैं और उसमें से पुरानी शर्ट और धोती बाहर निकालते हैं)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठजी—(कपड़ों को हाथ में लटकाकर देखते हुये) यह क्या, ये तो पुराने गन्दे कपड़े हैं। यह सब क्या है रामू ?

रामू—आप शायद भूल गये सेठजी, ये वे ही कपड़े हैं जिन्हें पहन कर मैं थका-हारा, परेशान आपकी शरण में नौकरी पाने के लिये आया था। आपने मुझे झाड़ू लगाने की नौकरी दी थी। आपकी कृपा और अपनी वास्तविकता को मैं भूल न जाऊँ, इसीलिये इन कपड़ों को मैंने सँभाल कर रखा है। इन्हें मैं प्रतिदित देखता हूँ, इन्हें देखने से मुझमें अहंकार नहीं आने पाता। मैं प्रतिदिन भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि हे प्रभो, मुझे अभिमान से बचाओ और शक्ति दो कि मैं अपने दयालु मालिक की सेवा, अधिक परिश्रम और ईमानदारी से कर सकूँ।

(सेठजी अपनी आँखों से आँसू पोंछते हैं और आगे बड़कर रामू को छाती से लगा लेते हैं। पहला मुनीम अपना सा मुँह लेकर चला जाता है)

सेठजी—मैं तुम पर खुश हूँ रामू, तुम मेरे बेटे जैसे हो। अगर तुम्हारी तरह सभी लोग हो जायें तो अभिमान से प्रेरित होकर पाप के दलदल में कोई न फँसने पाये। तुम सच्चाई और वफादारी की जागती मिसाल हो। तुमने अभिमान पर विजय पाने के लिए जो रास्ता अपनाया है, उसे देखकर मुझे संत कबीरदास की वाणी याद आ गई.........

कबिरा गरब न कीजिये, ऊंचा देख आवास।
काल्ह परे भुंई लेटना, ऊपर जैसी घास।

(दृश्यावसान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेवा का पथ :
जहाँ काँटे भी फूल बनते हैं

• • •

एक बार भगवान विष्णु ने एक आयोजन में देवों और असुरों को सहभोज पर आमंत्रित किया। असुरों ने उनके सामने अपनी यह अप्रसन्नता व्यक्त की कि सभी अवसरों पर जहाँ देवताओं को प्राथमिकता दी जाती है, वहाँ उनकी अवहेलना होती है। विष्णु ने उनकी बात सुनकर उन्हें उस रात के भोज में सबसे पहले भोजन करने के लिए कहा। असुर इस बात से बड़े प्रसन्न हुए भोज का प्रबन्ध किया गया। लम्बी कतार में आसन लगा दिये गये। आसनों के दोनों तरफ मिष्ठान्न से भरी थालियाँ सजा दी गयीं। असुरों से भोजन के लिए अनुरोध करते हुए विष्णु ने यह शर्त रखी कि उनके हाथ में दो फीट लम्बे लकड़ी के चम्मच बाँधे जायेंगे और उनसे ही उन्हें भोजन करना होगा। असुरों को अपनी बुद्धि पर भरोसा था। उन्होंने शर्त स्वीकार कर ली। असुरों के हाथ में चम्मच बाँध दिये गये। वे आसनों के दोनों ओर जाकर बैठ गये। अजीब दृश्य था। चम्मच से भोजन उठाकर वे खाने की चेष्टा कर रहे थे, पर चम्मच मुँह से थोड़ी दूर ही रह जाती थी। मिठाइयाँ मुँह में जाने की बजाय इधर-उधर गिर रही थीं। उनका सारा शरीर मिठाइयों के रस से तर हो गया। असुरों को अपनी हालत देखकर बड़ी शर्मिन्दगी हुई। वे बिना भोजन किये ही विष्णु को बुरा-भला कहते हुए उठ गये।

उसी जगह अन्य आसनों पर इसी तरह देवताओं के लिए भी भोजन की व्यवस्था की गयी थी। उनके हाथों में भी लकड़ी के चम्मच बाँध दिये गये थे। देवताओं ने बुद्धि से काम लिया। असुर यह देखकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैरान रह गये कि वे साधारण स्थिति में अपना भोजन कर रहे थे। हर देवता अपने सामने वाले को चम्मच से भोजन करा रहा था। इस तरह आमने-सामने वाले आपस में मजे से खाना खा रहे थे। सहयोग का यह उदाहरण सेवा-पथ पर चलने वालों के लिये प्रेरणादायी है।

इन्द्र के कोप के कारण भगवान श्रीकृष्ण के सामने गोवर्द्धन पर्वत उठाने की बात आयी। श्रीकृष्ण गोवर्द्धन पर्वत को अकेले ही उठा सकते थे, लेकिन उन्होंने सभी ग्वाल-वालों से अपना हाथ बँटाने का अनुरोध किया। ग्वाल-बाल उत्साह से श्रीकृष्ण के साथ जुट गये। श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत उठाने के लिए अपनी अँगुली लगाई और ग्वाल-बालों ने अपने डंडे और लाठियाँ। गोवर्द्धन पर्वत उठा लिया गया। सभी खुश थे, क्योंकि परस्पर सहयोग से यह कार्य हुआ था। श्रीकृष्ण सिर्फ अपनी ही प्रशंसा नहीं चाहते थे, इसलिये उन्होंने इस कार्य में सभी को सहयोगी बनाया। श्रेय पाने का झगड़ा ही सेवा-कार्यों की गति में बाधा उत्पन्न करता है, अतः श्रेय का समान विभाजन ही सभी दृष्टियों से नीतिसंगत है।

श्री हनुमानजी के बारे में कहा जाता है कि उन्हें उनके बल का स्मरण कराना पड़ता था। शाप के कारण वे अपना बल भूल जाते थे। जब तक कोई याद न दिलाये, उन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं होता था। इसका एक अर्थ यह भी है कि वे अपनी बड़ाई स्वयं नहीं करते थे। अपने द्वारा किये गये कार्यों का श्रेय वे भगवान श्रीराम को ही देते थे। कर्ता अपने किये गये कार्य के बारे में यदि स्वयं प्रचार करे, तो यह उसकी प्रतिष्ठा के अनुकूल न होकर विपरीत ही होगा।

हिन्दू धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन प्रधान देवता हैं। ब्रह्मा का काम है निर्माण, विष्णु का पालन और शिव का संहार। भारतवर्ष में ब्रह्मा का सिर्फ एक मन्दिर राजस्थान के अजमेर क्षेत्र पुष्कर में है। इसके अलावा कहीं भी ब्रह्मा का मन्दिर नहीं है। निर्माण करने वाले की पूजा नहीं होती। उसकी कृति में सभी कोई न कोई खोट ही निकालते हैं, पर निर्माण करने वाला ब्रह्मा किसी भी आलोचना पर ध्यान दिये बिना निर्माण-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार्य किये जा रहा है। उसके मन में स्वयं की बड़ाई सुनने की इच्छा कभी भी उत्पन्न नहीं होती।

एक बार ईश्वरचन्द विद्यासागर के पास एक व्यक्ति पहुँचा। वहाँ जाते ही उसने उन पर गालियों की बौछार शुरू कर दी। गाली सुनने पर भी विद्यासागर का चेहरा शान्त और सौम्य था। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और यह जानना चाहा कि उनके द्वारा उसका क्या भला किया गया है। वे जानते थे कि बिना किसी का भला किये कोई किसी को अपशब्द नहीं बोलता। उनकी बात सही निकली। सेवा-पथ पर बढ़ने वालों के सामने ऐसे अनेक दृष्टान्त आयेंगे। उन्हें शान्तभाव से ही प्रत्येक स्थिति का सामना करना होगा और अपना धैर्य तथा संयम बनाये रखना होगा।

एक कार्यकर्ता आलोचनाओं से घबड़ा कर किसी बुजुर्ग कार्यकर्ता के पास गया। उसने बताया कि कई व्यक्ति उसके द्वारा किये गये कार्यों के विरोध में अँगुलियाँ उठाते हैं। बुजुर्ग कार्यकर्ता ने उस कार्यकर्ता को अपनी ओर इंगित करके अँगुली दिखाने के लिए कहा। कार्यकर्ता ने अपने दायें हाथ की अँगुली की मुट्ठी बन्द करके बुजुर्ग कार्यकर्ता को एक अँगुली दिखाई। उन्होंने उसको समझाया कि तुम अपनी एक अँगुली मेरी ओर कर रहे हो पर बाकी तीन अँगुलियाँ स्वयं तुम्हारी ओर ही हैं। उन्होंने समझाते हुए कहा कि जो व्यक्ति सेवा-कार्य करेगा, उसे ऐसी कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ेगा।

चीन की एक प्रसिद्ध लोक-कथा है। वहाँ भविष्यवाणी हुई कि दस वर्ष तक बरसात नहीं होगी। किसानों ने अपने हल घर में रख दिये। परन्तु एक किसान सूखे खेत में हल जोत रहा था था। ऊपर जाते हुए बादलों को यह बात अजीब लगी। उन्होंने नीचे आकर किसान से पूछा—"क्या तुम्हें नहीं मालूम कि दस वर्षों तक वर्षा नहीं होगी ? फिर तुम हल किसलिए चला रहे हो ?" किसान बोला—"इन वर्षों में मैं अपना कर्म भूल न जाऊँ, इसलिए हल जोत रहा हूँ।" बादलों को यह बात लग गई। उन्होंने सोचा कि कहीं दस वर्षों में वे भी अपना कर्म न भूल जायें। ऐसा सोचते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही उन्होंने बरसना शुरू कर दिया। कार्य में लगे रहना ही सफलता की सीढ़ी है।

लक्ष्मीनारायण के पास पैसा था। वह एक धार्मिक स्थान पर कथा सुनने के लिए जाता था और सबके पीछे बैठता था। पूर्णाहुति के दिन वह अपनी रूमाल में कुछ सिक्के ले गया और उसने उन्हें भगवान के सामने रखी थाली में डाल दिया। पुजारी ने सिक्के डालते हुए देखकर उससे आगे बैठने का अनुरोध किया। उसने कहा—"मैं तो प्रतिदिन पीछे बैठता हूँ। आज तक किसी ने भी मुझसे आगे बैठने के लिए नहीं कहा। क्या आज पैसा देखकर मेरी इज्जत की जा रही है?" पुजारी ने कहा—"यह पैसे का नहीं, त्याग का सम्मान है।" सम्मान का पात्र वह व्यक्ति नहीं, जो धनवान है; बल्कि वह है, जो अपनी सम्पत्ति को उत्पादन या कल्याण-कार्यों में लगाता है। इसी प्रकार श्रेष्ठ बुद्धि और ऊँचे विचारों वाला विद्वान भी तब तक सम्मान का पात्र नहीं होता, जब तक वह अपनी बुद्धि, विचार और आचरणों से लोगों को सद्कर्मों की प्रेरणा नहीं देता। धन और बुद्धि का परहित के लिए उपयोग ही सभी दृष्टियों से उचित है और ऐसा करने वाला लोक में प्रतिष्ठा पाता है।

धार्मिक ग्रन्थों से हमें जानकारी मिलती है कि जो व्यक्ति तपस्या के लिए निकलता है, उसे रास्ते में धूप, पानी, काँटे, जंगली खूँख्वार जानवर, माया आदि का सामना करना पड़ता है। सेवा-पथ भी तपस्या-साधना का पथ ही है। तपस्वियों की तरह अडिग रहने पर ही राह के काँटे फूल बन जाते हैं●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शक्तिदायिनी माँ दुर्गा

● ● ●

अजीत अपने पिता के साथ दुर्गा पूजा के अवसर पर पूजा उत्सव की रौनक देखने के लिये निकला। आज उसे कलकत्ता के दुर्गापूजा उत्सव का आनन्द मिलेगा, इस बात से वह खुश नजर आ रहा था। विभिन्न सड़कें व गलियाँ तरह-तरह के बिजली के आकर्षक सामानों से सजी हुई थीं। विशाल जनसमूह माँ दुर्गा के दर्शन के लिये इधर-उधर घूमता नजर आ रहा था। सबके चेहरों पर प्रसन्नता थी। सभी ने मनपसन्द कपड़े पहन रखे थे। महिलाएँ विशेष रूप से सुसज्जित नजर आ रही थीं। स्थान-स्थान पर फेरी वालों व खोमचे वालों की भरमार थी। पुलिस कर्मचारी व्यस्त नजर आ रहे थे। बच्चों की टोलियाँ उछलती-कूदती पूजा के उत्सव का आनन्द ले रही थीं। अजीत भी उसी माहौल में खो गया। उसने कई घंटे इधर-उधर घूमते हुए विभिन्न प्रतिमाओं के दर्शन करने में बिता दिए।

थका-मादा अजीत अपने पिताजी के साथ घर वापस आया। उस दिन तो थकावट के कारण वह जल्दी ही सो गया, पर सुबह उठते ही दुर्गा की प्रतिमाओं के चित्र उसके दिमाग में घूमने लगे। वह अपने पिताजी से दुर्गा-पूजा के महत्त्व को समझना चाहता था। अतः उठते ही उसने अपने पिताजी से दुर्गा-पूजा के सम्बन्ध में कई बातें समझने की जिज्ञासा प्रगट की। अभी उसने स्नान भी नहीं किया था, अतः उसके पिता ने अजीत को जल्दी ही स्नान कर, खा-पीकर आने के लिए कहा। अजीत का मन दुर्गा-पूजा के सम्बन्ध में जानने के लिए बेचैन था। वह जल्दी ही तैयार होकर आ गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्वप्रथम अजीत के पिता ने दुर्गा-पूजा के सम्बन्ध में उसे बताया कि बहुत वर्ष पहले महाशक्तिशाली, अत्याचारी महिषासुर के अन्याय से सभी दुःखी थे। मनुष्यों के अलावा देवता भी उसके अत्याचारों से तंग आ गये थे। उस शक्तिशाली महिषासुर का नाश करने के लिए देवताओं ने महाशक्तिरूपी दुर्गा की रचना की। सभी देवताओं ने अपने-अपने तेज दुर्गा को दिये और दुर्गा महाशक्तिशाली के रूपमें अन्याय का विनाश करने के लिये प्रकट हुई। उन्होंने अजीत को बताया कि इन्हीं माँ दुर्गा ने महिषासुर का वध किया, तभी से हम माँ दुर्गा की आराधना कर रहे हैं।

अजीत ने अपने पिता से देवताओं के द्वारा प्राप्त तेज के सम्बन्ध में कुछ बातें बताने के लिये कहा। अजीत के पिता ने कहा—"दुर्गा को शिव ने त्रिशूल, विष्णु ने चक्र, वरुण ने शंख, अग्नि ने शक्ति, वायु ने धनुष व वाणों से भरा तरकस, इन्द्र ने वज्र, यम ने कालदण्ड, विश्वकर्मा ने अनेक प्रकार के अस्त्र व अभेद्य कवच, हिमालय ने सिंह व इसी तरह अन्यान्य देवताओं ने विभिन्न शक्तियाँ प्रदान कीं और महाशक्ति के रूप में दुर्गा को प्रतिष्ठित किया। अजीत के पिताजी ने समझाया कि बिखरी हुई शक्तियों के एकीभूत होने से एक ऐसी प्रबल शक्ति सामने आती है, जो दुष्कर व असंभव कार्य की सिद्धि सुनिश्चित करती है। अजीत का मन घूम रहा था। वह समझने की चेष्टा कर रहा था, पर अभी, पूरी बात उसकी समझ में नहीं आई थी।

अजीत के पिता ने महाशक्ति दुर्गा के महत्त्व को समझाने के लिये उससे जानना चाहा कि क्या वह नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बारे में कुछ जानता है? अजीत नेताजी के बारे में कुछ जानता था। उसने अपने पिताजी को बताया कि नेताजी ने देश की आजादी के लिये सभी सम्प्रदाय के लोगों को एक सूत्र में बाँधा, जर्मन व जापान से शस्त्र प्राप्त किये व इस संगठित शक्ति से उन्होंने शक्तिशाली अंग्रेजों का सामना किया। अजीत के पिता उसके मुख से यह बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने अजीत को शाबाशी देते हुये कहा कि शक्ति का संगठन ही माँ दुर्गा की उपासना है। अकेले नेताजी अंग्रेजी साम्राज्य का सामना नही कर सकते थे। माँ दुर्गा से उन्होंने शक्ति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संगठन की प्रेरणा ली। उन्होंने बिखरी शक्ति को संगठित किया। आजादी की आवाज़ को बुलन्द किया, अंग्रेजों को भारतवासियों की शक्ति का बोध हुआ तथा उनके पैर देश की धरती से उखड़ने को बाध्य हो गये।

अजीत के पिता ने महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए समझाया कि भूख और प्यास की परवाह किये विना, निरन्तर पदयात्रा किये हुये पूज्य बापू ने देशवासियों को किस तरह संगठित किया। विशाल अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध उन्होंने निःशस्त्र एक ऐसी शक्ति खड़ी कर दी जिसके सामने अंग्रेजी सल्तनत को झुकना पड़ा। महात्मा गांधी ने व्रत लिया था, सारे भारतवासियों को एक सूत्र में संगठित कर, देश को आजाद करने का। उनका यह व्रत पूरा हुआ १५ अगस्त, १९४७ को। उनके व्रत से अंग्रेज बाध्य हुए देश को स्वतन्त्र करने के लिये। अजीत के पिता ने उसे समझाया कि व्रत का अर्थ सिर्फ उपवास नहीं है। व्रत का अर्थ है किसी भी अच्छे कार्य के लिये भूख-प्यास को भूलकर, संकल्प की सफलता के लिये लग जाना।

व्रत के बारे में एक छोटा सा उदाहरण देते हुए उन्होंने समझाया कि घर में लड़की का विवाह होता है, विवाह के दिन लड़की के माता-पिता व अन्य सम्बन्धी लड़की के फेरे (कन्यादान) न होने तक अन्न ग्रहण नहीं करते। उस दिन वे यह संकल्प लेते हैं कि जब तक कन्यादान की रस्म पूरी न होगी, तब तक अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। इसका अर्थ यह है कि उस दिन सभी बाधाओं को येन-केन-प्रकारेण मिटाना होगा व कार्य-सिद्धि के लिये भूख-प्यास की चिन्ता किये विना वे जुटे रहेंगे। ऐसे आनन्द के अवसर पर भूखे रहने का खास रहस्य है—संकल्प-पूर्ति।

अजीत को अपने एक परिचित दुर्गा-भक्त का दृष्टान्त देते हुए उन्होंने एक रोचक बात बतायी। उन्होंने बताया—'मैं अपने एक दोस्त के यहाँ किसी काम से गया हुआ था। दोस्त पूजा में बैठा हुआ था। अतः वहाँ उससे मिलने के लिये एक घण्टा इंतजार करना पड़ा। पूजन के बाद दोस्त से बातें हो रही थीं, इसी बीच एक व्यक्ति वहाँ आया। उसने अपने पुत्र को मृत्यु से बचाने के लिये दवा की व्यवस्था के लिये मेरे मित्र से कहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरी बात सुनने के बाद मेरे उस मित्रने इस कार्य में सहयोग के प्रति अपनी असमर्थता प्रगट की। कुछ ही देर में एक दूसरा व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के लिये राशन की याचना करते हुये आया, पर उसे भी वही उत्तर मिला। उनके चले जाने के बाद मेरे मित्र ने बताया कि २-३ घंटे पूजा-पाठ में लग ही जाते हैं और यह कार्यक्रम कई वर्षों से चला आ रहा है। मेरे दिमाग में उलझन हुई व अनायास मैंने अपने मित्र को बताया कि सर्व-दु:खहारिणी को पूजन करने वाले व्यक्ति के पास कोई दु:खी व्यक्ति आये और वह उसकी सहायता न कर सके तो इस पूजनका अर्थ क्या है? मेरे मित्र को यह बात लगी। उसने उसी दिन से माँ दुर्गा की तरह शक्ति-संगठन का कार्य प्रारम्भ कर दिया। मेरे मित्र ने सामाजिक-संगठन, कार्यकर्त्ता, दान दाता, चिकित्सक, उदार व्यक्ति, सरकारी अधिकारी, शिक्षक, छात्र आदि सभी से सम्पर्क करना शुरू कर दिया। करीब एक वर्ष बाद उनके यहाँ फिर गया। मैंने देखा कि कई व्यक्ति अपने दु:खों की गाथा लेकर उसके यहाँ आये हुये थे। मेरा मित्र यथासाध्य उनका समाधान करने में लगा हुआ दिखाई दिया। अब उसने एक ऐसी शक्ति बटोर ली थी, जिससे वह दूसरों की सहायता करने में सक्षमता का अनुभव कर रहा था। उसके चेहरे पर नया तेज था। उस मित्र ने मुझे देखते ही आभार प्रकट किया व बताया कि वह अब माँ दुर्गा की उपासना शक्ति-संगठन के रूप में कर रहा है तथा माँ दुर्गा इस कार्य में उसे बराबर प्रेरणा प्रदान कर रही हैं।

अजीत भाव विभोर हो गया था वह अपने पिताजी से दुर्गा के सहस्र हाथ वाली बात को समझना चाहता था। उन्होंने समझाया कि सहस्र हाथों का अर्थ है संगठन। अजीत को उन्होंने याद दिलाया कि देश की आजादी की लड़ाई का झण्डा लिये हुए एक देशभक्त को गोली लगते ही दूसरा देशभक्त उसके हाथ से झण्डे को अपने हाथ में थाम लेता था। देशभक्त अपनी जान देकर भी झण्डे को ऊपर उठाये रखते थे। संगठित हाथ कभी नहीं कटते और उनकी पूर्ति दूसरे हाथ करते रहते हैं। संगठन-शक्ति ही सहस्र हाथ का द्योतक है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने पिता से पूरी बात सुनकर अजीत के मन में शक्ति-संगठन का विचार घूमने लगा। उसने व्रत लिया कि यह भी निरन्तर शक्ति-संगठन के कार्य में जुटा रहेगा। माँ दुर्गा की आराधना का रहस्य समझकर अजीत अपने आपको धन्य समझ रहा था●

किसी भी कार्यसिद्धि के लिये शक्ति की आवश्यकता होती है। शक्ति के बिना सामर्थ्य नहीं मिलती और सामर्थ्यहीन व्यक्ति विवश, असहाय और अयोग्य होने के कारण आत्मग्लानि अनुभव करता है। शक्ति की प्राप्ति के लिये केवल इष्ट देवता या इष्ट देवी की उपासना ही पर्याप्त नहीं है। उसके लिये अपने प्रयत्नों और पुरुषार्थ की भी आवश्यकता होती है। सच तो यह कि सारी शक्तियाँ नाना रूपों में हमारे चारो ओर बिखरी पड़ी हैं। हम उन्हें पहचानें और यत्नपूर्वक एकत्र करें तो हमें अपने भीतर ऐसी प्रबल शक्ति और दृढ़ सामर्थ्य का आभास होगा जिसकी सहायता से कुछ भी किया जा सकता है। शक्ति-संगठन की जिस महत्ता और रहस्यमयता का उद्घाटन माँ दुर्गा के स्वरूप में होता है. उसका ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनिवार्य है। विभिन्न शक्तियों को संगठित करके अर्थात् सबके सहयोग को अपने साथ लेकर काम करनेवाले व्यक्ति की जय और सफलता सुनिश्चित होती है। इस सत्य की परीक्षा कोई भी ले सकता है। शक्ति के उपासक को स्वयं शक्तिमान और कर्मवीर बनने का व्रत लेना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्बोधन का मनोविज्ञान

मनोविज्ञान के शिक्षक क्लास में पढ़ा रहे थे। शिक्षक विनोदी प्रकृति के थे। उन्होंने छात्रों से पूछा—"तुम्हें कभी-कभी गदहा, कुत्ता जैसे शब्दों से क्यों सम्बोधित किया जाता है ?"

छात्रों में से कोई भी इसका उत्तर न दे सका, मगर सभी ने इसका रहस्य जानने की उत्सुकता दिखलायी।

शिक्षक महोदय ने इस सम्बन्ध में एक कहानी सुनायी। रामनाथ का एक छोटा-सा परिवार था। परिवार के सदस्यों में थे रामानाथ, उसकी पत्नी गीता, पुत्र दीपक तथा पुत्री सुनीता। सुनीता विवाह योग्य हो गयी थी। रामनाथ को जानकारी मिली कि ग्रह-नक्षत्रों के चक्कर के हिसाब से यदि पुत्री की शादी दो महीने में न की गयी तो फिर आगे आने वाले दो वर्षों में उसकी शादी न होगी। रामनाथ को पुत्री के विवाह की चिन्ता सताने लगी। उस समय शादी तय करने का काम पंडित या नाई भी किया करते थे। रामनाथ ने सुनीता के लिए योग्य सम्बन्ध खोजने का भार अपने नाई भीमू पर दिया। भीमू नाई सम्बन्ध खोजने के लिए निकल पड़ा। कुछ दिनों बाद वापस आकर उसने बताया कि वह सुनीता की मँगनी तय करके आया है और बारात निश्चित दिन आयेगी। रामनाथ को यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि सम्बन्ध तय हो गया। परन्तु तभी उसके मन में यह विचार आया कि भीमू ने तो यह काम अपनी समझ के अनुसार किया होगा। क्या उसने लड़के के खानदान की पूरी जानकारी की होगी? ऐसा विचार आने पर उसने स्वयं ही योग्य सम्बन्ध खोजने का निश्चय किया। संयोग से उसे एक अच्छा खानदान मिल गया। उसने भीमू द्वारा तय किये गये विवाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का दिन ही वहाँ भी तय कर लिया। लौट कर उसने भीमू को बात बतायी और कहा—"तुमने जो सम्बन्ध तय किया है उसको ना कहला दो।" भीमू यह बात सुनकर गरम हो उठा। उसने साफ कह दिया कि सम्बन्ध न किये जाने की बात वह कभी नहीं करेगा। ऐसा करने से उसकी प्रतिष्ठा पर आंच आयेगी और भविष्य में कोई भी उसकी बात पर विश्वास नहीं करेगा।

रामनाथ को पत्नी गीता को इसकी जानकारी मिली कि सुनीता का सम्बन्ध पक्का किया जा रहा है। उसके मन में भी सुनीता के भले की बात सोचकर विचार आया कि अच्छे खानदान की बजाय अच्छी सास मिलनी ज्यादा जरूरी है। अगर उग्र स्वभाव वाली सास मिल गयी तो लड़की का जीवन कटना दूभर हो जायेगा। रामनाथ को बताये बिना ही वह भी सम्बन्ध की खोज करने लगी। अपनी समझ के अनुसार उसने भी एक अच्छा सम्बन्ध तय कर लिया और विवाह की वही तिथि तय कर ली गयी। बड़े ही उत्साह से उसने अपने पति रामनाथ को यह बात बतायी। इस सम्बन्ध को सबसे अच्छा बताते हुए उसने पहले तय किये गये दोनों सम्बन्धों को अस्वीकार कर देने के लिए कहा। रामनाथ सोच में पड़ गया। उसने मन में सोचा कि यदि पिता द्वारा तय किया गया सम्बन्ध ही रद्द किया जाय तो समाज में प्रतिष्ठा कैसे बनी रहेगी? वह हाँ या ना कुछ भी नहीं कह सका।

बच्चे बड़े चाव से कहानी सुन रहे थे। उनकी उत्सुकता धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी। शिक्षक महोदय ने बात आगे बढ़ायी। एक और नयी उलझन पैदा हो गयी।

उन्होंने बताया कि रामनाथ के पुत्र दीपक के मन में विचार उठा कि भीमू अपना कार्य कर रहा है, पिताजी अच्छा खानदान खोज रहे हैं, माँ अच्छी सास खोज रही है, पर कोई भी इस बात को नहीं सोच रहा है कि लड़का कमाने वाला हो। भविष्य में उसे ही उसका बोझ उठाना पड़ेगा। खोज के बाद योग्य लड़का तलाश कर, दीपक ने भी सम्बन्ध की बात पक्की कर ली और विवाह पूर्व निश्चित तिथि को ही तय कर लिया गया। रामनाथ को जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बात को पता लगा तो वह और भी चिन्तित हो उठा। उसे कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उसके एक-एक दिन एक-एक वर्ष के समान बीतने लगे। विवाह की तिथि नजदीक आती जा रही थी। रामनाथ और परिवार के अन्य सदस्यों की भी चिन्ता बढ़ती जा रही थी, लेकिन कोई भी अपनी बात से हटना नहीं चाहता था। सभी वर पक्ष वाले भी इसको अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना चुके थे। वे येन-तेन-प्रकारेण अपनी बात को ऊँची रखना चाहते थे। रामनाथ के सामने डूब मरने के अलावा अब कोई उपाय न था। उसके दिमाग की शक्ति जवाब दे चुकी थी। वह आत्म-हत्या करने का दृढ़ निश्चय करके, बिना किसी को कुछ कहे घर से निकल पड़ा। गाँव के बाहर कुएं की मुंडेर पर खड़ा होकर वह नीचे गिरने ही वाला था कि किसी महात्मा ने उसे पीछे से पकड़ लिया और अपनी ओर खींच लिया। महात्मा ने उसे धैर्य देते हुए पूरी बात सुनी और उसे अपने साथ घर लौटने के लिये कहा।

रामनाथ मंत्रमुग्ध हो गया। वह खिलौने की तरह महात्मा के पीछे-पीछे चलने लगा। महात्मा ने एक जगह देखा कि एक कुतिया ने छोटे बच्चों को जन्म दिया है। उन्होंने रामनाथ को कुतिया की एक बच्ची उठाकर ले चलने के लिए कहा। कुछ दूर जाने पर गधी की एक छोटी बच्ची भी साधू के कहने पर साथ ले ली गयी। इस तरह और आगे बढ़ने पर महात्मा की नजर एक सुअरी की बच्ची पर पड़ी और उन्होंने राम-नाथ को उसे भी साथ लेने के लिए कहा।

बच्चों की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। कक्षा में शान्त वातावरण था। सभी की आँखें शिक्षक महोदय पर लगी हुई थीं। उन्होंने आगे कहा कि रामनाथ महात्मा के पीछे-पीछे चला आ रहा था। रात हो गयी थी। रामनाथ महात्मा के साथ घर पहुँचा। महात्मा के कहने पर रामनाथ ने कुतिया, गधी व सुअरी की बच्ची को एक छोटी कोठरी में बन्द कर दिया। कुछ मन्त्रोपचार के बाद महात्मा ने रामनाथ की पुत्री सुनीता को कोठरी खोलकर अन्दर जाने के लिए कहा। सुनीता ज्योंही अन्दर गयी, उसकी आँखें यह देखकर आश्चर्यचकित रह गयीं कि ठीक उसी की तरह तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़कियाँ वहाँ और बैठी थीं। उसका सिर चकराने लगा। उसकी समझ में कोई बात नहीं आ रही थी। महात्मा रामनाथ को भी लेकर कोठरी में गये। वहाँ का दृश्य देखकर रामनाथ को भी विश्वास नहीं हो रहा था। उसकी आँखें फटी-सी रह गयीं। महात्मा ने रामनाथ से विवाह की तैयारियाँ करने के लिए कहा। बारातें सुबह ही आने वाली थीं। पूरी रातभर बारातों की खातिर की तैयारियाँ होती रहीं।

सुबह चारों बारातें एक साथ पहुँचीं। रामनाथ ने चारों लड़कियों की शादियाँ सम्पन्न कीं। सभी बारातें अपने-अपने गाँव चली गयीं। रामनाथ के अलावा कोई भी इस रहस्य को न जानता था।

कुछ महीने बीतने के बाद रामनाथ के मन में अपनी पुत्री सुनीता से मिलने की इच्छा जागृत हुई। किन्तु सुनीता का विवाह किसके साथ हुआ, यह जानना बड़ा मुश्किल था। उसने सभी लड़कियों के यहाँ जाने का निश्चय किया, ताकि वहाँ की जानकारी प्राप्त कर अपनी पुत्री की कुशलता के बारे में जान सके। रामनाथ अपने एक सम्बन्धी के यहाँ पहुँचा। अभिवादन के बाद उसने अपनी पुत्री की कुशलता के बारे में जिज्ञासा प्रकट की। सम्बन्धी ने उसकी पुत्री के स्वभाव की कड़ी आलोचना की। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन वह किसी न किसी से झगड़ा करती रहती है, तू-तू-मैं-मैं करती है। कभी किसी के कमरे में घुस जाती है, कभी किसी के। छोटे बच्चों से रोटी छीन लेती है और कभी उन्हें दाँतों से काट भी लेती है। सम्बन्धी को उसके स्वभाव पर बड़ा दुःख था। उन्होंनें कहा कि बार-बार समझाने पर भी उस पर कोई असर नहीं हो रहा है। रामनाथ को पूरी बात समझ में आ गयी। उसे यह समझते देर न लगी कि वह कुतिया वाली बच्ची थी, जो अपने स्वभाव के अनुकूल कार्य कर रही थी। सम्बन्धी से क्षमा-याचना करते हुए, रामनाथ दूसरे सम्बन्धी से मिलने के लिए रवाना हो गया।

दूसरी जगह पहुँच कर अभिवादन के बाद सम्बन्धी से जो जानकारी मिली, उससे उसका मन उदास हो गया। उसे बताया गया कि उसकी पुत्री बड़ी आलसी है। सुबह देर तक सोयी रहती है, हर काम को अनसुना कर देती है, जहाँ-तहाँ लेट जाती है, काम करने में कभी भी उसका मन नहीं लगता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रामनाथ ने मन में समझ लिया कि यह आदत गधो वाली बच्ची की है। उसने सम्बन्धी से कहा कि वह अपनी लड़की को आदत सुधारने के लिए समझायेगा। क्षमा-याचना करने के बाद वह वहाँ से भी चल पड़ा।

रामनाथ अपनी तीसरी लड़की के यहाँ पहुँचा। उसने देखा कि घर की ठीक से सफाई नहीं हुई थी। घर में जहाँ-तहाँ कूड़ा-करकट पड़ा था। इस बीच उसके सम्बन्धी भी आ गये। आते-आते ही उन्होंने रामनाथ से बिना कुशल-क्षेम पूछे उलाहना शुरू कर दिया। उन्होंने रामनाथ को बताया कि उनकी लड़की बहुत गन्दी है। उसे साफ रहने की इच्छा ही नहीं होती। बहुत कहने पर भी प्रतिदिन नहाती नहीं है। जूठन जहाँ-तहाँ डाल देती है, गंदे कपड़े पहने रहती है। बाजार की खुली और सड़ी चीजें खाने में उसे मजा आता है। पूरा परिवार उसकी आदतों से परेशान है। रामनाथ कुछ बोल न सका। वह जान गया कि वह सुअरी वाली बच्ची थी। वह बेटी को समझाने का आश्वासन देकर वहाँ से भी चल दिया।

रामनाथ के मन में प्रसन्नता हुई कि अब उसको अपनी लड़की से मिलने का मौका मिलेगा। वह अपने चौथे सम्बन्धी के यहाँ पहुँचा। सम्बन्धी ने उसकी आवभगत की। सुनीता की प्रशंसा करते हुए उन्होंने बताया कि वह प्रतिदिन समय से उठती है, घर में बड़ों को प्रणाम करती है, भगवान की पूजा करती है, घर के सारे कार्य अच्छी तरह से सम्पन्न करती है। रामनाथ को अपने सम्बन्धी की बात सुनकर मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। वह अपनी लड़की से मिलकर अपने घर चला आया।

शिक्षक महोदय ने पूरी कहानी सुनाने के बाद बच्चों को समझाया कि जो जैसा काम करता है, उसी के अनुकूल उसे सम्बोधित किया जाता है। कहानी सुनने के बाद बच्चों को भी सम्बोधन का रहस्य समझ में आ गया। बच्चों ने अपनी आदतों को सुधारने का विश्वास दिलाया। शिक्षक महोदय ने बच्चों से कहा कि अगली बार वे उन्हें इस बात का रहस्य समझायेंगे कि कभी-कभी किसी को रावण, कंस, राम आदि शब्दों से क्यों सम्बोधित किया जाता है। तभी छुट्टी की घंटी घनघना उठी और बच्चे शिक्षक की बातों को मन ही मन गुनते हुए अपने-अपने घर चल पड़े। एक बात, जो सबके मन में बैठ गयी थी, वह यह थी कि अच्छा सम्बोधन पाने के लिए गंदी आदतों को छोड़कर अच्छी आदतें अपनाना जरूरी है ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवान श्रीकृष्ण के आदर्श

● ● ●

कृष्ण जन्म की अपूर्व झाँकी का आयोजन। समारोह-स्थल सजा हुआ है। मनोरम रोशनी से सभी का मन आनन्दित है। भक्तगण भजन में लगे हुए हैं। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी भगवान कृष्ण के गुण गा रहे हैं। प्रभु की आराधना कर रहे हैं—भक्तों को सहारा व नयी शक्ति देने के लिए।

मेरा ध्यान भगवान की भव्य आकर्षक मूर्ति पर टिका हुआ है। अचानक मुझे मेरे मन और भगवान श्रीकृष्ण के बीच मेरी आत्मा खड़ी दिखायी दी। मैं अपने आप में खो गया।

आत्मा ने मन को सम्बोधित करते हुए कहा—"कृष्ण की आराधना करना चाहते हो तो तुम्हें यह सोचना होगा की इनकी आराधना करनेवाले को किस रास्ते पर चलना होगा। भगवान कृष्ण ने अपने जीवन में जिन कठिन व्रतों का पालन किया है, उसका प्रतिनिधित्व तुम्हें करना होगा। भगवान के भजन-पूजन करने का अर्थ है उनके बताये हुए रास्ते पर चलने की चेष्टा।"

मेरा मन यह बात समझ नहीं पा रहा है। वह आत्मा से इस बारे में और जानना चहता है। मन की ही जिज्ञासा को देख कर आत्मा ने बात आगे बढ़ायी व बहुत सरल तरीके से समझाते हुए कहा—"यदि तुम किसी स्वयंसेवक को गलत काम करते हुए देखो, तो तुम्हें उस स्वयंसेवक के व्यवहार के प्रति दुःख होगा। सुरक्षा के लिए तैनात किसी रक्षक को भागते हुए देखो तो तुम्हारे विचार उसके प्रति अच्छे नहीं रहेंगे, शक्ति के उपासक को भयभीत देखो, गुणवान व्यक्ति को अज्ञानता का कार्य करते हुए देखो व धनवान को पैसे का सदुपयोग करते न देखो तो तुम्हें अवश्य कष्ट होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी तरह यदि भगवान कृष्ण को अपने इष्ट के रूप में मानते हो तो तुम्हें किस रास्ते पर चलना है, यह सोचना होगा।

मन को आत्मा की बात कुछ समझ में आयी। उत्साहपूर्वक वह और कुछ जानने के लिये आतुर दिखायी दिया। मन के कुछ कहने के पूर्व ही कृष्ण की आराधना का मर्म समझाते हुए आत्मा ने कहा—"भगवान कृष्ण की आराधना करने वाले को हमेशा हँसमुख और प्रसन्नचित्त होना चाहिए। उसके चेहरे पर निराशा एवं उदासी के भाव कदापि नहीं आने चाहिए। श्रीकृष्ण का सारा जीवन ही संघर्षमय था। भगवान श्रीकृष्ण सदा विपरीत परिस्थितियों में रहे। जन्म के पहले ही उनके माता-पिता को कारागार में बन्द कर दिया गया। कारागार में ही उनके नवजात छः भाइयों की हत्या कर दी गयी। कारागार में जन्मे श्रीकृष्ण भगवान को जन्म के दिन भयंकर आँधी-तूफान व वर्षा के बीच, रात्रि में अन्यत्र ले जाया गया। वे राजघराने में जन्मे और ग्वालों के यहाँ पले। बचपन में ही उन्होंने अनेक दुश्मनों का नाश किया। जीवन में अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं। उनके सामने ही सारा यदुवंश समाप्त हो गया, पर वे हमेशा शांत समभाव से रहे।" आत्मा ने मन से प्रश्न किया—"ऐसे संघर्षशील भगवान श्रीकृष्ण का क्या तुमने ऐसा कोई चित्र देखा है, जिसमें उनका चेहरा उदास हो? क्या तुमने कभी उनके उदास चेहरे की कल्पना की है?" मेरे मन ने नकारात्मक उत्तर दिया।

आत्मा ने मन से कहा—"यदि तुम भगवान श्रीकृष्ण की उपासना करते हो तो तुम्हें कष्ट और प्रतिकूल परिस्थितियों से घबड़ाना नहीं चाहिए और हमेशा अपने को प्रसन्नचित रखना चाहिए, जिस प्रकार तुम्हारे आराध्य देव रहे हैं।"

आत्मा ने वर्तमान परिस्थितियों से जूझने के लिये भगवान श्रीकृष्ण के गोवर्द्धन पर्वत उठाने की घटना याद दिलाते हुए कहा कि इतने विशाल बोझ को उठाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने सभी ग्वाल-बालों को संगठित किया। कृष्ण ने संगठन की महत्ता बतायी। संगठन से ही सभी कुरीतियों का नाश किया जा सकता है, यह सन्देश उन्होंने दिया था। संगठन से ही बड़ी बुराई का मुकाबला किया जा सकता है। भगवान की सच्ची आराधना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है कि हम भी संगठन के कार्य में लगें। सारे समाज व देश को संगठित करें—बुराइयों का दमन और अनैतिकता का सामना करने के लिए।

मेरे अधीर मन को आत्मा ने समझाते हुए महाभारत के युद्ध की याद दिलायी। महाभारत में गुरु शिष्य को, शिष्य गुरु को, मित्र मित्र को, भाई भाई को मारने के लिए तैयार है। ऐसी परिस्थिति में अर्जुन का मन विचलित है, युद्ध न करने के लिए। श्री कृष्ण बड़े धीरज से कर्तव्य के बारे में समझा रहे हैं। युद्ध क्षेत्र में उनका यह धीरज रखना पथ दिखलाना है—धैर्य, धीरता का। "भयंकर परिस्थिति में धैर्य न छोड़ो", यह सन्देश है भगवान श्रीकृष्ण का। आत्मा ने मन से कहा—"कृष्ण के अनुयायी के रूप में तुम्हें इस धैर्य को अपनाना होगा। विपरीत परिस्थितियों में तभी तुम अपना आत्मसंतुलन रख सकोगे।" इसी संदर्भ में आत्मा ने समझाया की बुराइयों का नाश करने के लिए तुम्हें अपने स्वजनों से भी लोहा लेना होगा व अपने को ऐसी परिस्थितियों के लिए तैयार करना होगा।

आत्मा ने दुष्टों के दमन की अनेक घटनाएँ सुनायी। लग रहा था मेरा मन पूतना, वकासुर, कंस, शिशुपाल आदि अनेक दुष्टों का नाश करते हुए भगवान श्रीकृष्ण को देख रहा है। आत्मा ने समझाया कि दृढ़ संकल्प से बड़े से बड़े शत्रु का मुकाबला किया जा सकता है।

मन और आत्मा का साक्षात्कार चल ही रहा था कि 'भगवान श्रीकृष्ण की जय' की आवाज के साथ मेरी ध्यान-मुद्रा भंग हो गयी। मैंने पुनः अपने को उसी भजन के माहौल में पाया। मेरा मन चंचल हो रहा था आत्मा को खोजने के लिए, लेकिन आत्मा अदृश्य हो गयी थी। मेरी आँखें प्रभु की मूर्ति पर टिकी हुई थीं। उनका दिव्य मुखमण्डल विपत्तियों में हँसते रहने, बुराइयों का दमन करने के लिए संगठित होकर सामूहिक रूप से सामना करने, सभी से मित्रता का व्यवहार करने, दूसरों के लिए जीवन में कष्ट झेलने व धैर्य से कार्य करने की प्रेरणा दे रहा था। मैं भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में नतमस्तक हो गया व भजन-कीर्तन का आनन्द लेने लगा ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जादूगर नेताओं का मैजिक शो

● ● ●

आम चुनाव के दिन थे। कलकत्ते में विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की हलचल काफी तेज थी। एक रविवार को जब मैं मुहम्मद अली पार्क से गुजर रहा था, तो वहाँ भारी भीड़ जमा देखकर मेरे पाँव स्वभावतः रुक गये। कोई विराट् चुनाव सभा वहाँ हो रही थी, जिसमें देश के कई बड़े नेता आये हुए थे। संयोगवश मेरे पास महाजाति सदन में चल रहे विख्यात जादूगर सरकार के बहुचर्चित मैजिक शो की उसी दिन शाम की टिकट थी। शो का समय होने में अभी पूरे एक घन्टे की देर थी, अतः राजनीति से कोई लगाव न होने के वावजूद समय काटने के लिये वहाँ कुछ देर रुककर भाषणों का आनन्द लेना मुझे किसी मैजिक शो के समान ही आकर्षक प्रतीत हुआ।

लगभग पौने घण्टे तक मैं धुआँधार भाषणों का रस लेता रहा। फिर सुनी हुई बातों को मन ही मन गुनता हुआ महाजाति सदन की ओर चल पड़ा और वहाँ पहुँच कर हाल में अपनी सीट पर जा बैठा। जादूगर के करिश्मे सचमुच देखने लायक थे। मैं भी उनमें खो गया। शो खत्म होने के बाद घर लौटते समय मेरी आँखों के सामने नेताओं और जादूगर सरकार के चेहरे रह-रह कर उभरने लगे। मुझे यह देखकर अत्यन्त विस्मय हुआ कि दोनों के चेहरों और गुणों में अद्भुत समानता थी। मेरे मन में विचारों का प्रवाह अचानक तीव्र हो गया। मेरे चिन्तन के लिए एक नया विषय मिल गया था। मैंने जो कुछ सोचा इस विषय में, वह कितना सच है, कितना झूठ है, इसका निर्णय आपके हाथों में है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टेज पर जाते ही सिद्धहस्त जादूगर सबसे पहले कई भाषाओं में में अत्यन्त शिष्टाचारपूर्वक झुक-झुक कर दर्शकों का अभिवादन करता है। अपना प्रभाव स्थापित करने का शुभारम्भ वह इसी क्रिया से करता है। फिर तो धीरे-धीरे दर्शकों का हाल यह हो जाता है कि जादूगर उन्हें जो दिखाये, बस वही दीखता है। उनकी अपनी दृष्टि जैसे रह ही नहीं जाती। चुनाव सभाओं में आये हुए नेताओं की मुख-मुद्रा और बातें कहने की पद्धति जादूगरों से एकदम मिलती-जुलती हैं। श्रोताओं को आकर्षित करने की उनकी अचूक पद्धति यह होती है कि वे उनकी ही भाषा में दो-चार वाक्य बोलकर भाषण की शुरुआत करते हैं।। वे अपने वाक्‌जाल में जनसमूह को समेट लेने की कला में पारंगत होते हैं।

जादूगर अपने मुख्य करिश्मे प्रारम्भ करने के पहले छोटे-छोटे बहुत से करिश्मे दिखाकर अपनी धाक जमाने की चेष्टा करता है। नेतागण देश और जनता के विषय में बातें कहने से पहले अपने राजनीतिक जीवन की विशेष उपलब्धियों का हवाला अपने भाषण में देकर, जनता में अपने असाधारण व्यक्तित्व के प्रति विश्वास जगाते हैं। जादूगर थोड़ी-थोड़ी देर के बाद परदे के पीछे जाता है और एक नया भेष, एक नया चेहरा बदलकर सामने आ खड़ा होता है। यह सिलसिला बराबर चलता रहता है। नेतागण भी अब भेष बदलकर मंच पर आने की कला में जादूगरों को काफी पीछे छोड़ चुके हैं। जादूगरों को तो एक भेष से दूसरा भेष बदलने में कुछ समय भी लगता है, मगर नेताओं को तो केवल झंडा बदलने की जरूरत पड़ती है। यह काम मिनटों में हो जाता है। झंडे के साथ-साथ उनके चेहरे, भाषण, हाव-भाव, सब अपने-आप बदल जाते हैं।

जादूगर तरह-तरह के चमत्कार दिखाता है। कभी वह गमले में पानी डालकर उसमें सुगन्धित फूल पैदा कर देता है, कभी स्टेज पर रहस्यमय ढंग से अपने सहायकों को गायब कर देता है। उसकी हाथ की सफाई का तो जवाब नहीं है। वह अपने हाथ में ली हुई किसी वस्तु को अनेक वस्तुओं में बदल सकता है, हवा में उड़ सकता है, अपने साथियों को उड़ा सकता है, काले को सफेद, सफेद को काला बना सकता है और ऐसे-ऐसे करतब दिखा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकता है, जिसे देखकर दर्शकों को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता। अब जरा एक नजर नेताओं पर भी डालिए। मजे हुए नेतागण भाषण से बिना पानी की खेती कर सकते हैं, आश्वासनों के जरिए बड़े से बड़े हवा महल खड़े कर सकते हैं, उन्हें राजनीतिक मंच से एकदम गायब कर सकते हैं, वे जनता को अपनी वाक्विद्या के बल से भविष्य के काल्पनिक आकाश में उड़ा सकते हैं, सच को झूठ, झूठ को सच बना सकते हैं। अपने मायाजाल में जनता को उलझाये रखना उनके लिए सहज-सम्भव है।

एक और ध्यान देने की बात है। दो समान ख्याति वाले जादूगर अपनी जादूकला का प्रदर्शन एक साथ कभी नहीं करते। प्रत्येक जादूगर की अपनी टीम होती है और वह अपने नाम का प्रचार बढ़ा-चढ़ा कर करता है। दो नामधारी नेता भी एक साथ मिलकर काम करना पसन्द नहीं करते। इससे उनके व्यक्तिगत प्रभाव की वृद्धि में बाधा उपस्थित होती है। प्रत्येक नेता अपने नाम, अपने दल के नाम का प्रचार करने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है। अपने यश में किसी की भागीदारी उसे किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं होती।

प्रत्येक सिद्धहस्त जादूगर अपने हमपेशेवर जादूगरों के जादुई करिश्मों का रहस्य जानता है, मगर वह उसे जनता के सामने प्रकट नहीं करता है। राजनेता सत्ता प्राप्त करने के बाद क्या-क्या करिश्मे करते हैं, यह नेताओं की बिरादरी में हर कोई जानता है, मगर कोई भी उन करिश्मों का रहस्य खोलना नहीं चाहता। वह इस सिद्धान्त का पालन जादूगर की तरह ईमानदारी से करता है।

जादूगर का सम्मोहन सर्वविदित है। वह उसका प्रयोग अपने आजमाये हुए तरीकों से करता है। नेतागण झूठे आश्वासनों तथा लम्बे-चौड़े भाषणों को ही सम्मोहन मानते हैं। जादूगर रुपयों की वर्षा करते हुए, तालियों की गड़गड़ाहट के बीच रुपयों की थैली भर देता है, जबकि वह सच्चाई न होकर "ट्रिक" मात्र होती है। नेतागण भी मंच अथवा कुर्सी पाते ही अपनी थैलियों को देखते ही देखते भर लेते हैं। कई बार तो उनकी थैलियों का प्रदर्शन भी जनता के सामने किया जाता है, जैसे जन्मदिन पर थैली की भेंट, आकस्मिक संकटों में सहायता-कोष आदि।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जादूगरों की सफलता जिस प्रकार उनके सहयोगियों और जोकरों पर काफी कुछ निर्भर करती है, उसी प्रकार नेता भी अपने सहयोगियों के कन्धे का सहारा लिए बिना चोटी तक नहीं पहुँच सकता। अभी तक राजनीति में जोकरों का प्रवेश नहीं हुआ था, किन्तु अब हमारे नेतागण जोकरों के महत्त्व को स्वीकार करते हुए, अपने दल में उनका स्थान सुरक्षित रखने का निश्चय कर चुके हैं।

किसी को जेब में पड़ी हुई कोई वस्तु अथवा रुपये-पैसे आश्चर्यजनक ढंग से अपनी जेब में मँगा लेने की कला का प्रदर्शन भी बड़े जादूगर करते हैं। नेतागण इस कला में उनसे कहीं अधिक सिद्धहस्त हैं। जिस किसी की जेब से वे कुछ निकालने का फैसला कर लेते हैं, वह वस्तु पलक झपकते उनकी जेब में आ विराजती है।

प्रतिदिन तीन शो दिखाने वाला जादूगर प्रत्येक शो में जिस प्रकार रटे-रटाये संवाद दुहराता है और टेप रिकार्ड किये हुए संगीत अथवा ध्वनियों को पुनः-पुनः बजाता है, उसी प्रकार नेतागण, चुनाव, सभा, उद्घाटन, अभिनन्दन, शोक, उत्सव आदि अवसरों पर कण्ठस्थ किये हुए भाषणों का प्रयोग करते हैं। जादूगर तो तीन शो दिखाकर क्लान्त हो जाता होगा, मगर बेचारे नेता को तो एक-एक दिन में न जाने कितनी सभाओं, कितने आयोजनों में अपनी कलाओं का प्रदर्शन करना पड़ता है।

जादूगर का बेटा जादूगर, व नेता का बेटा नेता। दोनों का एक ही स्टेज और एक ही तरह के करिश्मे। यही कार्यक्रम चल रहा है वर्षों से।

मेरे मन में अब यह प्रश्न घूमने लगा है कि देश के विशाल हाल में मौजूद हम अठहत्तर करोड़ दर्शक पैंतीस वर्षों से मंच पर आँखे गड़ाये, कौतूहलपूर्वक जिस मैजिक शो को चुपचाप देख रहे हैं, उसका मध्यान्तर अथवा समापन कब होगा? तमाशा कुछ घण्टों का ही अच्छा लगता है, मगर अब तो ऐसा लगने लगा है कि जादूगरों का यह मायाजाल हमारे विवेक, हमारी दृष्टि और हमारी चेतना को अधिक समय तक अपने बन्धन में बाँध कर जैसे पंगु कर देगा। क्या यह स्थिति विचारणीय नहीं है? ०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार-प्रमुख भगवान शिव

● ● ●

महाशिवरात्रि का दिन। अजीत अपने पिताजी के साथ विभिन्न शिव मन्दिरों के शृंगार का दर्शन करके घर लौटा। पिताजी ने कुछ ही दिनों पहले उसे गणेश-पूजन के विषय में कई रोचक बातें बताई थीं। अतः उसका मन अब भगवान शिव के बारे में जानने के लिए उत्सुक था।

शिव मन्दिरों में अजीत को भगवान शिव के अनेक रूप देखने को मिले थे। प्रत्येक रूप की छवि उनके मन में अंकित हो गई थी। शिव के भांति-भांति के चित्रों के रहस्यों को जानने के लिए वह आतुर था। घर पहुँचते ही उसने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

अजीत के पिता के मन में भी विचार-मंथन चल रहा था। महाशिव का इस बार उन्होंने परिवार-प्रमुख के रूप में चिन्तन किया। उनके दिमाग में परिवार-प्रमुख की भूमिका चक्कर लगाने लगी। उन्होंने परिवार-प्रमुख के गुणों को सामने रख कर शिव के स्वरूप की व्याख्या करनी शुरू कर दी।

उन्होंने बताया—"संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक न एक दिन परिवार-प्रमुख बनना पड़ता है। शिव की पूजा करने वाले या उपासना करने वाले व्यक्ति यदि श्रेष्ठ परिवार-प्रमुख बनने के लिये भगवान शिव के स्वरूप में व्याप्त तद्विषयक गुणों का अवलोकन करें और उन्हें अपने जीवन में ढालने की चेष्टा करें तो उन्हें एक वरदान की उपलब्धि होगी।"

अजीत ने पूछा—"श्रेष्ठ परिवार-प्रमुख में कौन-कौन से गुण होने चाहिये? आप एक-एक गुण की व्याख्या करते हुए मुझे भगवान शिव में उन गुणों के दिखाइये तो मुझे यह बात अच्छी तरह समझ में आ जायेगी।"

अजीत के पिता मुस्कराये। अजीत की उम्र अभी अधिक नहीं थी, मगर वह कभी-कभी ऐसे गम्भीर प्रश्न पूछ बैठता था जिससे उसकी कुशाग्र बुद्धि पर उसके पिता को बड़ा ही सुखद आश्चर्य होता था। उन्होंने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"श्रेष्ठ परिवार-प्रमुख में सबसे पहला गुण यह होना चाहिये कि वह अपने सुख से अधिक अपने आश्रितों के सुख की चिन्ता करे और इसके निमित्त त्याग करे। मनुष्य के जीवन में तीन वस्तुएँ सर्वाधिक आवश्यक हैं—रोटी, कपड़ा और मकान। भगवान शिव ने इन तीनों ही चीजों की समस्त सुविधायें अपने परिवार को देकर, स्वयं सात्त्विक जीवन अपनाया है। उन्होंने परिवार के लोगों के लिये नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों, बहुमूल्य वस्त्रों और भव्य भवनों की व्यवस्था की है। उनका अपना आहार बना आक, धतूरा विल्वपत्र, वस्त्र बना बाघम्बर और निवास स्थान बनी महाश्मशान भूमि। अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा भोग्य पदार्थों के प्रति लोभ पर विजय पाने का इससे अच्छा उदाहरण और कहीं मिलेगा क्या?"

अजीत ध्यानस्थ होकर सारी बातें सुन रहा था। उसने प्रश्न किया— 'दूसरा गुण'? पिताजी बोले—"जिस परिवार में दिन-रात कलह मची हो, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, स्पर्धा का बोलबाला हो, वह परिवार नर्क बन जाता है। स्वर्ग वहाँ है जहाँ एकता, प्रेम और शान्ति हो। अब देखो न, शिव का वाहन बैल, उमा का वाहन सिंह, शिव का कण्ठहार सर्प, श्री गणेश का वाहन मूषक और कार्तिक का वाहन मयूर। सब आपस में एक दूसरे के पुश्तैनी जानी दुश्मन हैं। मगर वाह रे शिव का प्रताप! सबको प्रेम और एकता के ऐसे धागे में बाँध रखा है कि वे आपस में हिलमिल कर रहते हैं। श्रेष्ठ परिवार-प्रमुख में परिवार के विभिन्न प्रकृति के सदस्यों को परस्पर अटूट स्नेह सूत्र में बाँध कर रखने की क्षमता होनी अनिवार्य है।"

अजीत का चेहरा सन्तोषभरी मुस्कान से खिल उठा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह एक नया ज्ञान प्राप्त कर रहा है। तभी पिताजी बोले— "शिवलिंग की पूजा का सही अर्थ यह है कि शिव स्वयं चाहते हैं कि संसार शिव के रूप की नहीं, बल्कि उनके विराट् शिवत्व की पूजा करे। चित्रों में उनका ध्यानमग्न रूप भी इस ओर संकेत करता है कि परिवार का कल्याण गहन चिन्तन के बिना सम्भव नहीं है। वे अपने परिवार और समूची सृष्टि के मंगल के लिये ध्यानस्थ रहते हैं।"

अजीत की जिज्ञासा चरम सीमा पर जा पहुँची थी। इससे पहले कि उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिताजी कुछ और वतलाते, उसने किशोर सुलभ उत्सुकता के साथ पूछा—"तो क्या शिवजी को विषपान करते हुए जो दिखलाया जाता है, उसका भी कोई सम्बन्ध परिवार-प्रमुख के गुणों से है ?"

पिताजी ने कहा—"बिल्कुल है। परिवार-प्रमुख की जिम्मेदारियाँ पहाड़ की तरह भारी होती हैं। उसे परिवार के दोषों, अवगुणों, झंझट-झमेलों और तकरार पैदा करने वाली बातों को विष की घूंट की तरह अपने गले में ही अटकाये रखना पड़ता है। यदि उन चीजों को वह उगल दे तो परिवार का अनिष्ट होगा और यदि अपने गले के नीचे उतार ले तो स्वयं विक्षिप्त हो जायेगा। शिव ने समुद्र-मंथन के समय उत्पन्न महाभयंकर हलाहल विष को सृष्टि के कल्याण के लिये अपने कण्ठ में धारण कर किया था और नीलकण्ठ हो गये थे। परिवार-प्रमुख को भी नीलकण्ठ बनना चाहिए।"

अब एक और गुण देखो। "परिवार-प्रमुख को जहाँ एक ओर अपने गुरुतर दायित्वों के निर्वाह के लिये प्रतिपल सतर्क रहना पड़ता है, वहाँ दूसरी ओर उसे छोटी-बड़ी बातों के विषय में उचित निर्णय लेने के लिये अपने मस्तिष्क को सर्वदा सन्तुलित, शीतल और स्वस्थ भी रखना पड़ता है। सर्वमान्य और सर्वोचित निर्णय ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं। महाशिव के मस्तक पर चन्द्रमा और गंगा का होना इस बात का ही संकेत है कि मस्तिष्क को सदा शीतल रखो। चन्द्रमा और गगाजल दोनों में असीम शीतलता है।"

अजीत विचारों में निमग्न था। वह अपनी आँखों के सामने एक दूसरे ही शिव का दर्शन कर रहा था। तभी उसने एक शंका उठायी—"पिताजी, शिवजी यदि शीतल मस्तिष्क वाले हैं तो उन्होंने भयंकर क्रोध करके ताण्डव नृत्य क्यों किया, कामदेव को जलाकर भस्म क्यों कर डाला ? उनमें तो इतना क्रोध है कि उनके तीसरे नेत्र से ज्वाला निकलने लगती है।"

अजीत के पिताजी मुस्कराये और बोले—"क्रोध निश्चय ही बुरी चीज है, मगर उसकी भी एक मर्यादा है। अन्याय, उद्दण्डता, अनुशासनहीनता और अराजकता का दमन करने के लिये किया गया क्रोध मंगलकारी होता है। परिवार के सदस्यों में यह भय भी होना चाहिये कि यदि वे उचित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

... वेद वेदांग विद्यालय ...

आचरण नहीं करेंगे तो उनका स्वामी उन पर रुष्ट होगा, उन्हें दण्ड देगा। तुलसीदास ने भी कहा है 'भय बिन होंहि न प्रीति।' तुमने शिवजी का क्रोधित रूप चित्रों में देखा है, मगर तुम्हें यह भी जान लेना चाहिये कि जितनी जल्दी वे क्रुद्ध होते हैं, उतनी ही जल्दी वे शान्त होकर अपराधी को क्षमा भी कर देते हैं। परिवार-प्रमुख के स्वभाव में कठोरता और कोमलता का समन्वय होना अनिवार्य है।"

"अब तुम्हें काम-दहन का अर्थ समझाता हूँ। शिव ने काम पर विजय पाकर यह आदर्श सामने रखा कि परिवार-प्रमुख को सदा कामजयी होना चाहिये। यदि वही कुमार्ग पर चलने लगे, कामी, लम्पट और पतित हो जाय तो समूचे परिवार का चरित्र उसी के अनुरूप बनेगा। परिवार-प्रमुख को अपने आत्मीयजनों को सुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने के लिये स्वयं चरित्रवान बनना चाहिये।"

"शिव ने कुरीतियों का बहिष्कार करने, दीन-हीनों, सेवक-दासों को प्रेम और आदर प्रदान करने का भी एक अनूठा उदाहरण स्थापित किया। अपने विवाह में उन्होंने दहेज न लेकर पर्वतराज की कन्या का वरण किया। देवों और ऋषियों की भाँति अपने गणों, भूत-प्रेतों को भी ससम्मान बारात में साथ चलने का अवसर दिया। परिवार-प्रमुख को कुरीतियों का विरोधी होना चाहिये। उसे अपने सम्पर्क में रहने वाले निम्न श्रेणी के व्यक्तियों को भी सम्मान और महत्त्व देकर अपने बड़प्पन का परिचय देना चाहिये।

"शिव तो महादेव हैं। वे गुणों की खान हैं। उनका अनुकरण मनुष्य तो क्या, किसी भी लोक के प्राणी नहीं कर सकते। हम शिव की उपासना करते हैं। हमें उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिये और यही कामना करनी चाहिये कि हम सूर्य भले न बन सकें, कम से कम दीपक तो अवश्य बनें जिससे अपने मन को प्रकाश मिले, दूसरों को प्रकाश मिले और हमारा व्यक्तित्व और चरित्र सबके लिये वन्दनीय और अनुकरणीय बने। यदि भगवान शिव की यह प्रेरणा हमारा मार्गदर्शन करे तो हमारी शिव-भक्ति भी सार्थक होगी और हमारा मनुष्य जीवन भी।"

अजीत इस तरह मुस्करा उठा जैसे उसे कोई अनमोल चीज मिल गयी हो। उसने सचमुच भगवान शिव का एक सर्वथा नवीन रूप देखा, जो उसकी कल्पना से परे था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri